CHATURPOST

जुलाई 2025 वर्ष 01, अंक 01 • पृष्ठ : 40, मूल्य 50/-रुपये

RNI.NO. CTBIL/25/A1634

खबर वार्ता

सरकार V/S भ्रष्टाचार

शराब फैक्ट्री में पानी घोटाला! : पेज 17

चैतन्य बघेल गिरफ्तार : पेज 21

भारतीय महिला फुटबॉल टीम में छत्तीसगढ़ की बेटी किरण : पेज 38

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

CHATURPOST
खबर वार्ता

INSIDE

- संपादक
  शिवानी
- मार्केटिंग व प्रसार
  आशीष वर्मा
- लेआउट/ग्राफिक्स
  दीन दयाल साहू
- विधिक सलाहकार
  मो. अजीज हुसैन
  मो. 93002-05215

-: कार्यालय :-

रामा भवन बिलासपुर रोड
भनपुरी रायपुर -493221
वाट्सएप- 7587266011
प्रकाश एवं मुद्रक शिवानी द्वारा
रामा भवन बिलासपुर रोड
भनपुरी रायपुर से प्रकाशित व
आसमा पब्लिशर्स इंडिया प्रालि.
जयस्तंभ चौक रायपुर से मुद्रित
RNI-CTBIL/25/A1634

11 मध्यप्रदेश को औद्योगिक और रोजगार संपन्न राज्य बनाएंगेः मुख्यमंत्री डॉ. यादव

14 रिकार्ड वाले IAS अमिताभ जैन

15 कर्मचारियों का हल्ला बोल, मोदी की गारंटी लागू करने की मांग

13 धनखड़ का त्याग पत्र

19 नकली खाद से अन्नदाता बदहाल

26 पाट जात्रा के साथ शुरू हुआ विश्व प्रसिद्ध 75 दिवसीय उत्सव

39 सस्ता गोल्ड खरीदना होगा आसान

40 तन्वी द ग्रेट का रेड कार्पेट प्रीमियर

मुद्दे की बात

भ्रष्टाचार को शिष्टाचार की संज्ञा... समस्या का जड़ यही

भ्रष्टाचार दो स्तर पर चल रहा है। एक सरकार के स्तर पर, जिसमें सरकारी खजाने को नुकसान होता है या विकास कार्य नहीं होते और सरकारी राशि खर्च हो जाती है। दूसरा भ्रष्टाचार वह है जिससे सीधे आम जनता प्रभावित होती है। दूसरे तरह के भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए सरकार ने सिस्टम में बदलाव भी किया है, मगर भ्रष्टाचारी इसका दूसरा रास्ता निकाल ही लेते हैं। सरकार को चाहिए कि जनता से संबंधित कामों में चल रहे भ्रष्टाचार पर सबसे पहले लगाम कसी जाए। एंटी करप्शन ब्यूरो तो अपना काम का ही रहा है, सिस्टम इस तरह बने कि जनता को केवल सरकारी फीस देनी पड़े और समय पर उसका काम हो जाए।

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद भाजपा और कांग्रेस, दोनों पार्टियों की सरकार बन चुकी है। दोनों ही सरकारों ने अपनी नीतियों पर चल कर राज्य के विकास की दिशा में काम किया है। जनता को समस्याओं से राहत दिलाने के लिए भी सरकारी सिस्टम में अमूलचूल बदलाव हो चुका है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि मध्यप्रदेश से अलग होने के बाद छत्तीसगढ़ ने विकास की रफ्तार पकड़ ली है। चाहे वह कृषि का क्षेत्र हो, उद्योग का हो या शहरों का सुनियोजित विकास का मामला ही क्यों न हो, सभी सेक्टर में विकास हो रहा है और विकास की योजनाएं बन रही हैं। पहले कांग्रेस की सरकार आयी, जिसमें तत्कालीन मुख्यमंत्री अजीत जोगी ने नई राजधानी का फैसला लिया था। इनके बाद आए तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने अपने तीन कार्यकाल में विकास के मिसाल पेश किए। नया रायपुर को उन्होंने ही संवारा, प्रदेशभर में सड़कों, पुल-पुलियों का जाल बिछा दिया, धान की बंपर खरीदी कर रिकॉर्ड बनाया। इसके बाद फिर कांग्रेस की सरकारी आयी, जिसमें तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ की माटी की पहचान को बनाए रखने की अवधारणा पर काम किया। अब फिर से भाजपा की सरकार में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय सुशासन पर जोर देकर विकास को आगे बढ़ा रहे हैं।

इन सबके बीच देश और राज्यों की एक गंभीर समस्या खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। वह है भ्रष्टाचार। हर सरकार भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकने का संकल्प लेती है, लेकिन यह संकल्प शत-प्रतिशत पूरा नहीं हो पाता। जब भी सरकार बदलती है, पिछली सरकार के भ्रष्टाचार के मामले सामने आने लगते हैं। अब भी सीबीआई और ईडी किन मामलों का जांच कर आरोपियों की गिरफ्तारी कर रही है, यह किसी से छिपा नहीं है। इन मामलों को सियासत का रंग भी दिया जा सकता है। भ्रष्टाचार दो स्तर पर चल रहा है। एक सरकार के स्तर पर, जिसमें सरकारी खजाने को नुकसान होता है या विकास कार्य नहीं होते और सरकारी राशि खर्च हो जाती है। दूसरा भ्रष्टाचार वह है जिससे सीधे आम जनता प्रभावित होती है। दूसरे तरह के भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए सरकार ने सिस्टम में बदलाव भी किया है, मगर भ्रष्टाचारी इसका दूसरा रास्ता निकाल ही लेते हैं। सरकार को चाहिए कि जनता से संबंधित कामों में चल रहे भ्रष्टाचार पर सबसे पहले लगाम कसी जाए। एंटी करप्शन ब्यूरो तो अपना काम का ही रहा है, सिस्टम इस तरह बने कि जनता को केवल सरकारी फीस देनी पड़े और समय पर उसका काम हो जाए। रजिस्ट्री और राजस्व के कुछ कामों में जरुर बदलाव किया गया है, लेकिन यह कितना असरकारी रहेगा, इसके लिए इंतजार करना पड़ेगा। राजस्व अमले के खिलाफ ही भ्रष्टाचार की शिकायत ज्यादा आती है और इसके बाद भी आम जनता सरकारी ऑफिसों के चक्कर काटती दिखती है। भाजपा के चिंतन शिविर में भ्रष्टाचार को छोड़ने और शिष्टाचार को पकड़ने की नसीहत सभी मंत्रियों, विधायकों को दी गई है। इसके बाद भी जब तक सरकारी कामों में भ्रष्टाचार को शिष्टाचार की संज्ञा दी जाती रहेगी, इस समस्या का समाधान थोड़ा मुश्किल ही होगा। बाबू से लेकर अफसर तक काम के बदले इस शिष्टाचार की अपेक्षा करते हैं। इसी परंपरा को तोड़ने की जरुरत है। तभी छत्तीसगढ़ राज्य भ्रष्टाचार मुक्त होने की दिशा में आगे बढ़ सकेगा।

सरकार V/S भ्रष्टाचार

मैनपाट के चिंतन शिविर में पढ़ाए गए पाठ के कई मायने

भाजपा से ही पहचान है, मंत्री और विधायकों को दिलाया याद

शिवानी

छत्तीसगढ़ के मैनपाट में मंत्री, विधायकों, सांसदों को पढ़ाया गया शिष्टाचार का पाठ। राजधानी रायपुर से 366 किमी दूर लगे भाजपा के चिंतन शिविर में सबको यह सीख दी गई कि भ्रष्टाचार से दूर रहें, जनता से विनम्रता से मिलें और यह न भूलें कि भाजपा के कारण ही आपकी पहचान बनी हुई है। तीन दिनों की करीब 12 कक्षाओं में लगातार भाजपा के विचार और कार्यपद्धति की घुट्टी विस्तार से पिलाई गई। ऐसा नहीं है कि सभी मंत्री या विधायक भाजपा में नए हैं। बल्कि इसलिए उनका ब्रेन वॉश किया गया, ताकि सरकार में आने के बाद पार्टी के संस्कार और विचार को भूल न जाएं। सरकार में रहते तक उन्हें जनता की सेवा करनी है, उसके बाद तो फिर भाजपा के पास ही लौटना है। दूसरी ओर भाजपा कतई नहीं चाहती कि सरकार में वापसी के बाद फिर से कांग्रेस को मौका मिल जाए। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने तो साफ कहा कि भाजपा से ही आपकी पहचान बनी हुई है। उन्होंने साफ कहा कि पार्टी के जनप्रतिनिधि स्थानीय लोगों के साथ अपना व्यवहार और शिष्टाचार बना कर रखें, विनम्रता और संयम बना कर काम करें। श्री नड्डा की बातों से यह भी स्पष्ट संकेत मिलता है कि पार्टी को सबकी खबर है, कौन, कहां पर क्या कर रहा है, इसकी पूरी रिपोर्ट राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तक पहुंच रही है।

भ्रष्टाचार पर चेतावनी

छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनने से पहले चुनावी सभाओं में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाया था। शराब घोटाले से लेकर छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग में हुए भ्रष्टाचार की जांच कर कार्रवाई का भरोसा दिलाया था। कांग्रेस की हार के बाद भाजपा की सरकार बनते ही साय सरकार ने भ्रष्टाचार की सभी फाइलें खोल दी और एक के बाद एक जांच कर कार्रवाई की जा रही है। ऐसे में भाजपा और संघ कतई यह बर्दाश्त नहीं करेगा कि किसी मंत्री, विधायक या सांसद पर भ्रष्टाचार का छींटा भी पड़े। यही कारण है कि शिविर में साफ शब्दों में कह दिया गया कि जनप्रतिनिधि ठेकों के काम से दूर रहें। सरकार बनने के बाद पैदा होने वाले नए रिश्तेदारों से भी बच कर रहें। इस समझाइश का सीधा अर्थ है कि सरकारी ठेकों और तबादलों के लिए दलाल किस्म के लोग मंत्री व विधायक का चक्कर काटने लगते हैं। मंत्रियों को अपने निज सचिव के काम पर भी निगाह रखने की समझाइश भी अप्रत्यक्ष रूप से दी गई है। पार्टी सूत्रों का कहना है कि कुछ जनप्रतिनिधियों के बारे में फीड बैक सही नहीं मिला है, इस कारण से भी संघ और भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी चिंतित हैं। पार्टी नहीं चाहती कि गलती से भी विपक्षी पार्टी को भाजपा के खिलाफ भ्रष्टाचार का मुद्दा मिल जाए, इस कारण इसमें किसी की भी गलती बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

शिष्टाचार की बात क्यों?

शिविर में राष्ट्रीय महामंत्री बीएल संतोष, केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह, धर्मेंद्र प्रधान जैसे दिग्गज मौजूद थे। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का ऐनवक्त पर आना टल गया। तीन दिनी प्रशिक्षण वर्ग में मुख्य रूप से फोकस शिष्टाचार और विनम्रता पर रहा। यह बातें केवल औपचारिक रूप से नहीं कहीं गई हैं, बल्कि साय सरकार के डेढ़ वर्ष के कार्यकाल के दौरान मिले फीड बैक के आधार पर खामोशी से चेतावनी दी गई है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय एक सहज और सरल जनप्रतिनिधि हैं, जनता के हित में वे पार्टी लाइन पर चल कर योजनाओं को ईमानदारी से लागू करने की कोशिश कर रहे हैं। सुशासन तिहार के रूप में वे खुद जनता के बीच गए और सरकारी योजनाओं का फीड बैक लिया। मंत्री और विधायकों को भी लक्ष्य दिए गए हैं। डेढ़ साल में कुछ मंत्री और विधायकों की कार्य प्रणाली पर बीच- बीच में सवाल उठे हैं, सरकारी कामों की विफलता भी सामने आई है। मंत्री व विधायक किस तरह जनता से मिल रहे हैं, क्या वे जनता की बात सुनने और मदद करने के लिए उपलब्ध हैं? इन सभी बातों का फीड बैक किसी न किसी रास्ते से संघ और भाजपा तक पहुंचता रहा है। कुछ मंत्रियों के बारे में यह शिकायत आम है कि वे भाजपा कार्यकर्ताओं तक को समय नहीं दे पा रहे हैं। यही कारण है कि भाजपा ने राज्य मुख्यालय कुशाभाउ ठाकरे परिसर में मंत्रियों की ड्यूटी

लगा दी थी कि वे वहां तय दिन बैठ कर समस्याओं की सुनवाई करें। पार्टी यह बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करेगी कि जिन कार्यकर्ताओं के कारण सरकार बनी है, वे अपने को उपेक्षित महसूस करें। चिंतन शिविर में बार- बार शिष्टाचार और विनम्रता को ध्यान में रखने का पाठ पढ़ाया गया है। जाहिर है, भविष्य में इसे ध्यान में नहीं रखने वाले जनप्रतिनिधि परेशानी में पड़ सकते हैं।

सत्ता व संगठन के संतुलन पर फोकस

आमतौर पर जिस पार्टी की सरकार बनती है, उसके संगठन से दूरी बढ़ जाने की शिकायत आती है। भाजपा की डेढ़ साल की सरकार में यही बात दबी- छिपी जुबान से आती रही है। चिंतन शिविर में संगठन और सरकार के बीच समन्वय पर विशेष रूप से मंथन किया गया। साय सरकार ने फील्ड पर समन्वय के साथ काम करने के लिए मंत्रियों को जिलों का जिम्मा भी दिया है। समय- समय पर इनके प्रभार जिले परिवर्तित भी किए जाते हैं। इसमें प्रशासन के साथ समन्वय के लिए सचिवों को भी जिलों का प्रभार दिया गया है, जिससे वे वहां जाकर विकास कार्य की समीक्षा कर सकें। डेढ़ साल में जिलों में जाकर विकास कार्य व योजनाओं की समीक्षा करने के साथ भाजपा संगठन से समन्वय करने की दिशा में ज्यादातर मंत्री कमजोर पाए गए हैं। दौरे पर जाने वाले मंत्री केवल सरकारी कार्यक्रमों तक सिमट कर रह जाते हैं, इस कारण संगठन के पदाधिकारी व कार्यकर्ता दूरी महसूस करने लगे। चिंतन शिविर में समन्वय पर विशेष रूप से फोकस किया गया है, जिससे बिना किसी गतिरोध के सरकार व पार्टी का काम चलता रहे। संघ के पदाधिकारी भी समय- समय पर जिलों के दौरे पर जाते रहते हैं। संघ की विचारधारा के प्रचार के साथ वे सरकार के कामों का फीड बैक भी लेते हैं। जाहिर है, मंत्री व विधायकों की कमजोरी की रिपोर्ट सतत आती रहती है और इसमें सुधार की दिशा में भी काम किया जाता है।

आपसी समन्वय पर जोर

सरकार और संगठन के अलावा पार्टी ने अपने वरिष्ठ नेताओं के आपसी समन्वय पर भी जोर दिया है। पार्टी सूत्रों का कहना है कि सरकार बनने के बाद निश्चित रूप से मंत्री या विधायकों का काम बढ़ा है, मगर पहले जिस तरह से संगठन में रहकर उनके बीच आपसी समन्वय बना हुआ था, उसमें कमी दिख रही है। समन्वय की यह शिकायत बिलासपुर संभाग से सबसे ज्यादा आती है। मंत्री और विधायकों का समन्वय कम होने का असर विकास में तो दिखता ही है, संगठन स्तर पर कार्यकर्ताओं की नाराजगी बढ़ती है। यही कारण है कि वरिष्ठ नेताओं ने सभी को समन्वय व संयम के साथ काम करने की नसीहत दी है। चुनाव से पहले भाजपा ने प्रदेश अध्यक्ष का जिम्मा बिलासपुर संभाग में अरुण साव को दी थी और उन्हें डिप्टी सीएम बनाया गया

है। चुनाव के बाद उनकी जगह बस्तर संभाग से किरण देव सिंह को अध्यक्ष बनाया गया है। संगठन में निचले स्तर पर अभी व्यापक फेरबदल नहीं किया गया है, राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव होने के बाद हो सकता है कि जिला स्तर पर परिवर्तन किया जाए। विशेष कर उन जिलों में अध्यक्ष बदले जा सकते हैं, जहां लंबे समय से एक ही व्यक्ति पद पर बैठा हुआ है।

सोशल मीडिया हथियार, उपयोग करने के लिए दी सलाह

राजनीति में अभी आरोप- प्रत्यारोप के बीच सोशल मीडिया का उपयोग ज्यादा हो रहा है। इसे देखते हुए चिंतन शिविर में एक क्लास इसी विषय पर लगाई गई थी। मंत्री व विधायकों को सलाह दी गई है कि वे सोशल मीडिया पर पोस्ट होने वाली सामग्री को खुद ही देख लें, जिससे किसी तरह की गलती या चूक की गुंजाइश न रहे। कई बार गलत पोस्ट के कारण सरकार या भाजपा की किरकिरी होने लगती है। साथ ही घटिया स्तर का आरोप विपक्ष पर लगाने से भी फजीहत होती है। एक्सपर्ट ने शिविर में एक- एक बिंदु को बारीकी से समझाया और किन विषयों पर पोस्ट किए जा सकते हैं, इसकी भी विस्तार से जानकारी दी है।

सरकार का बना रोड मैप

चिंतन शिविर में वैसे तो मुख्य रूप से संगठन और सरकार के आचार विचार पर ही बात हुई है। शिविर में कई दिग्गज नेता शामिल थे, इस कारण समय मिलने पर राज्य सरकार के आगामी कार्यकाल में लागू होने वाली योजनाओं और अगले विधानसभा चुनाव तक लक्ष्य पूरे किए जाने पर भी चर्चा हुई है। माना जा रहा है कि शिविर से साय सरकार को भविष्य के लिए रोड मैप मिल गया है। चुनाव से पहले भाजपा ने प्रधानमंत्री आवास योजना को प्रमुखता से लागू करने की घोषणा की थी। सरकार बनते ही केंद्र सरकार ने आवास योजना के लिए फंड जारी कर दिया है। साय सरकार ने 18 लाख पीएम आवास बनाने की दिशा में काम शुरू कर दिया है। इसी तरह की सरकारी योजनाओं पर अब बारीकी से काम किया जाएगा, जिससे जनता को लाभ मिले और मैदानी नतीजे दिखे। भाजपा ने आदिवासी इलाके पर फोकस किया है और साथ ही ओबीसी को प्राथमिकता में रखा हुआ है। इसी समीकरण के हिसाब से सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। यह भी माना जा रहा है कि रिक्त निगम-मंडलों पर

नियुक्तियों के साथ मंत्री मंडल के विस्तार पर भी बात आगे बढ़ सकती है। विधायक से सांसद बन चुके बृजमोहन अग्रवाल का मंत्री पद अब तक रिक्त है और दो नए मंत्री बनाए जाने की अटकल लगाई जा रही है।

रजत जयंती रहेगी खास

छत्तीसगढ़ राज्य की सौगात देने वाले पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती का शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है। संयोग से इस साल छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना के भी 25 बरस पूरे होने जा रहे हैं। इसी वर्ष छत्तीसगढ़ विधानसभा का नया भवन नवा रायपुर में तैयार हो रहा है और शीतकालीन सत्र इसी नए भवन में होने की पूरी संभावना है। इन सभी को मिला कर राज्य सरकार इस साल एक नवंबर राज्य स्थापना दिवस को बहुत ही भव्य तरीके से मनाने जा रही है। चिंतन शिविर में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के साथ विधानसभा अध्यक्ष डा. रमन सिंह भी मौजूद थे। माना जा रहा है कि रजत जयंती मनाने के प्रारंभिक प्रस्तावों पर चर्चा हुई है।

भ्रष्टाचार पर सरकार ने यूं चलाया हंटर

चिंतन शिविर में भ्रष्टाचार पर दी गई नसीहत के तुरंत बाद साय सरकार ने अपने कार्यकाल में भ्रष्टाचार के खिलाफ अब तक की गई कार्रवाई का हिसाब भी दे दिया। सरकार ने स्पष्ट कर दिया कि भ्रष्टाचार में किसी को बख्शा नहीं जाएगा। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार भ्रष्टाचार के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस की नीति को पूरी दृढ़ता से लागू कर रही है, यह स्पष्ट संदेश दिया गया। विशेष बात यह है कि शिविर के बाद राज्य शासन ने आबकारी विभाग से जुड़े एक बहुचर्चित मामले में अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई करते हुए 22 अधिकारियों को निलंबित कर दिया। यह कार्रवाई पूर्ववर्ती शासनकाल के दौरान हुए 3200 करोड़ रुपये के बहुचर्चित शराब घोटाले की जांच के आधार पर की गई है। वर्ष 2019 से 2023 के बीच हुए इस घोटाले में आबकारी विभाग के कुछ अधिकारियों की संलिप्तता पाई गई थी, जिन्होंने अवैध रूप से अर्जित धन से संपत्तियाँ अर्जित की थीं। आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो और भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की गहन जांच से यह स्पष्ट हुआ कि यह एक संगठित सिंडिकेट के रूप में संचालित घोटाला था। जांच में सामने आए तथ्यों के आधार पर सरकार ने तत्क्षण कार्रवाई करते हुए संबंधित अधिकारियों को निलंबित कर दिया।

जीरो टॉलरेंस नपैगा हर भ्रष्टाचारी

छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव 2023 में सरकारी भ्रष्टाचार बड़ा मुद्दा था। इससे सबक लेते हुए मौजूदा विष्णुदेव सरकार भ्रष्टाचार पर नकेल कसने का हर संभव प्रयास कर रही है। इसी का असर है कि अखिल भारतीय सेवा से लेकर राज्य सेवा तक गड़बड़ी करने वाले अफसर जेल भेजे जा रहे हैं।

एसीबी- ईओडब्ल्यू को फ्री हैंड : सरकार ने भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्यवाही करने वाली अपनी एजेंसी ईओडब्ल्यू और एसीबी को फ्री हैंड देख रहा है। इसका असर है कि एसीबी रिश्वतखोरों और भ्रष्टाचारियों के खिलाफ ताबड़तोड़ कार्यवाही कर रही है। करीब सालभर में एजेंसी ने 82 से ज्यादा मामलों में कार्यवाही कर चुकी है। इसमें 108 अधिकारियों, कर्मचारियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है।

एसडीएम, जेडी जैसे अफसर

एसीबी ने भ्रष्टाचार के मामले में 108 अधिकारियों, कर्मचारियों को गिरफ्तार किया है। इनमें पटवारी और बाबू ही नहीं, एसडीएम और ज्वाइंट डायरेक्टर, सुपरिटेंडेंट इंजीनियर, एग्जीक्यूटिव इंजीनियर जैसे अफसर शामिल हैं। आधा दर्जन थानेदार और सब इंस्पेक्टर भी शामिल हैं।

277 ठिकानों पर छापा: एक साल में ही अनुपातहीन संपत्ति और भ्रष्टाचार के केस में ईओडब्लू छत्तीसगढ़ समेत दिल्ली, कोलकाता, हरियाणा, राजस्थान जैसे कई राज्यों में इस एक साल में 277 ठिकानों पर छापा मारकर तालाशी ली है। इनमें सीजीएमएससी, एक्साइज और कोयला घोटाला से जुड़े आरोपियों के यहां ईओडब्लू ने बड़े स्तर की रेड की है।

जांच के साथ चालान भी हो रहा पेश: ऐसा नहीं है कि ईओडब्ल्यू और एसीबी केवल जांच ही कर रही है। जांच के साथ एजेंसी कोर्ट में आरोप पत्र भी उसी तेजी से दाखिल कर रही है। सूत्रों के अनुसार ईओडब्लू अभी तक 51 प्रकरणों में 10 लाख पेज से अधिक का चालान कोर्ट में पेश कर चुकी है।

आईएएस, आईएफएस से लेकर राज्य सेवा के अधिकारियों पर भी कार्रवाई: पूर्व सरकार के कार्यकाल हुए घोटालों की जांच केंद्रीय और राज्य एजेंसियां कर रही हैं और एक-एक कर सभी दोषी जेल भेजे जा रहे हैं। केवल शराब घोटाला ही नहीं, राज्य सरकार डीएमएफ घोटाला, महादेव सट्टा एप घोटाला और तेंदूपत्ता घोटाले जैसे मामलों की भी गहराई से जांच करा रही है। इन मामलों में पूर्व मंत्री से लेकर आईएएस अफसर गिरफ्तार हो चुके हैं। तेंदूपत्ता बोनस घोटाला में आईएफएस के खिलाफ हाल ही में चालान पेश किया गया है।

प्रशासन में भी सुधार: सरकार भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के साथ-साथ राज्य में सुशासन और पारदर्शी प्रशासन को भी सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। इसके तहत जेम पोर्टल से खरीददारी को अनिवार्य किया गया है, ई-ऑफिस प्रणाली की शुरुआत हुई है, 350 से अधिक सुधारों के जरिये निवेश की राह भ्रष्टाचार मुक्त, पारदर्शी और आसान बनाई गई है, इसी क्रम में सिंगल विंडो सिस्टम 2.0 के माध्यम से एनओसी की प्रक्रिया बेहद सरल कर दी गई है।

ऑनलाइन और पारदर्शी बनाई गई प्रक्रिया

कांग्रेस शासन के दौरान हुए भ्रष्टाचार से सबक लेते हुए विष्णुदेव सरकार ने आबकारी विभाग में स्मरु-10 नीति को समाप्त कर पारदर्शी व्यवस्था लागू की है। अब देशी-विदेशी मदिरा की बोतलों पर अब नासिक मुद्रणालय से छपने वाले होलोग्राम अनिवार्य किए गए हैं ताकि नकली शराब की बिक्री पर रोक लगाई जा सके। इसी तरह खनिज ट्रांजिट पास की प्रक्रिया अब पूरी तरह ऑनलाइन कर दी गई है, लकड़ियों की ई-नीलामी प्रणाली लागू की गई है और योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन के लिए सुशासन एवं अभिसरण विभाग की स्थापना की गई है।

हर स्तर पर कसा जा रहा नकेल

छत्तीसगढ़ सरकार ने PSC-2021 परीक्षा में हुई अनियमितताओं की जांच CBI को सौंप दी है, जिसमें आयोग के तत्कालीन चेयरमैन को गिरफ्तार किया गया है। वहीं, भारतमाला योजना और सीजीएमएससी घोटालों की जांच भी EOW को सौंपी गई है, जिनमें दोषी अधिकारियों को निलंबित किया जा चुका है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध इस पारदर्शी कार्रवाई में आईएएस, आईएफएस से लेकर राज्य सेवा के विभिन्न स्तर के अधिकारियों पर भी कार्रवाई हुई है।

> भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस की नीति से काम कर रही है हमारी सरकार... यह सुशासन की सरकार है। किसी भी अधिकारी या कर्मचारी के द्वारा अपने शासकीय दायित्वों के निर्वहन में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी तथा लापरवाह अधिकारियों पर तत्काल कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। **-विष्णुदेव साय, मुख्यमंत्री**

क्षेत्रीयता और जातिवाद के साये में विधानसभा चुनाव

बिहार विधानसभा 2025 के चुनाव में बीस राजनीतिक दल सियासी दांव लगाते अपनी बिसात बिछा रहे हैं। 243 विधानसभा सीट के लिए सभी दल अपना अपना पैंतरा बदल कर बस अपनी जीत को लक्ष्य बना रहे हैं। बिहार की चुनावी लड़ाई दो राजनैतिक धड़ों में बंट गई है। एनडीए एलाइंस और महागठबंधन दलों के बीच सीटों के बंटवारा का मुद्दा बहस में हैं। 2025 के चुनाव में किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत हासिल नहीं हो सकेगा यह सीटों के बंटवारा से ही तय होता दिख रहा है।

रविन्द्र गिन्नौरे

इसी के साथ सात बार मुख्यमंत्री बनने वाले नीतिश कुमार फिर से अपना सुशासन चलाने की ओर अग्रसर होते नज़र आ रहें हैं जो एनडीए एलाइंस और महागठबंधन दोनों के बीच सत्ता और सरकार चलाने की अहम् भूमिका निभा सकते हैं। बिहार में क्षेत्रीय पार्टियों के बढ़ते वर्चस्व के कारण कांग्रेस या भाजपा को सरकार बनाने के लिए उन्हीं के नक्शे-कदम पर चलना पड़ रहा है।

अस्सी-नब्बे के दशक में बिहार की राजनीति में जातिगत मुद्दे को उछालते हुए लालू यादव ने ओबीसी का कार्ड खेला था जिसमें लालू सत्ता के शीर्ष पर जा बैठे थे। राष्ट्रीय जनता दल के सुप्रीमो लालू यादव ने बिहार सत्ता संभाली इसी के साथ कांग्रेस बिखरती चली गई। लालू ने जातीय राजनीति को धार देने के लिए एक शिगूफा छोड़ा और इस बीच एक नारा चर्चित हुआ, भूरा बाल साफ करो। 1990 के दशक में इस नारे के साथ सियासी माहौल ही बदल गया। नारा लगाकर बिहार के भूमिहार, राजपूत, ब्राह्मण और लाला को सत्ता की राजनीति से बाहर निकाल फेंकने की मुहिम छेड़ी गई। और तब बिहार की सत्ता में बैठे लालू यादव ने बिहार की राजनीति में वंशवाद की एक नई परिपाटी चलाई। चारा घोटाले में जेल जाने के साथ राबड़ी यादव को मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठा दिया। बिहार की राजनीति में ऐसा गज़ब परिदृश्य शायद ही फिर कभी देखने को मिलेगा। विधानसभा चुनाव के ठीक पहले चुनाव आयोग ने मतदाता सूची शुद्ध करने के लिए एसआईआर करवा रहा है। चुनाव आयोग की कार्रवाई के खिलाफ महागठबंधन के दलों ने घोर आपत्ति जताते हुए सुप्रीम कोर्ट जा पहुँचे मगर नतीजा सिफर रहा। मतदाताओं की पहचान के साथ बिहार में अवैध विदेशी घुसपैठियों की पहचान उजागर हो रही है। घुसपैठियों के कारण अनेक विधानसभा की डेमोग्राफी ही बदल गई जिसे महागठबंधन अपना वोटबैंक समझता है।

चुनाव आयोग ने अब तक बिहार के आठ करोड़ मतदाताओं की जाँच में पाया कि 5.76 लाख मतदाताओं के नाम एक से अधिक स्थान पर दर्ज हैं। वहीं 12.55 लाख मतदाताओं के नाम उनकी मृत्यु पश्चात भी मतदाता नाम सूची में दर्ज है। जाच के दौरान 35.69 लाख मतदाता अपने पते पर नहीं मिले और

17.37 लाख मतदाता अन्य स्थानों पर चले गये। चुनाव आयोग के बूथ लेवल आफिसर मतदाताओं से गणना पत्र भरवा रहे हैं। आयोग ने बताया कि 1अगस्त को मतदाता सूची प्रकाशित कर दी जाएगी।

बिहार के चुनावी परिदृश्य को देखें। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पिछड़ती चली गई और उसे महागठबंधन में शामिल होना पड़ा । लालू यादव के बाद नीतिश कुमार बिहार की सत्ता के मिथक बन बैठे। 2020 में महागठबंधन की सरकार बनते बनते रह गई और एनडीए एलाइंस के सहयोग से नीतिश कुमार मुख्यमंत्री बन बैठे। महागठबंधन और एनडीए एलाइंस के बीच राजनैतिक रस्साकशी में नीतिश कुमार एकमात्र ऐसी धुरी बने हुए हैं जिसके चलते उन्हें बिहार की सत्ता में हर बार बैठाना राजनैतिक दलों की मजबूरी हो गई है। बिहार विधानसभा चुनाव में क्षेत्रीय दलों का वर्चस्व 2025 के चुनाव में भी कायम रहेगा। एनडीए एलाइंस और महागठबंधन के घटक दलों के कितने उम्मीदवार चुनाव में खड़े किए जाए, इस बात पर राजनैतिक रार चल रही है।

मोदी ने रैली से किया शंखनाद

भाजपा ने बिहार चुनाव के लिए अभी से कमर कस ली है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मोतीहारी रैली के साथ चंपारण से नया बिहार बनाने का संकल्प लेते अपने संबोधन में समृद्ध और विस्तृत बिहार के नये भविष्य की परिकल्पना करते हुए उसकी रूपरेखा को प्रस्तुत करते हुए भाषण की शुरुआत भोजपुरी से की। प्रधानमंत्री ने बिहार में कई परियोजनाओं के शुरुआत की घोषणा भी की। बिहार को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मोतीहारी की सभा में ऐसा ही आव्हान किया है।

सीटों का ये है गणित

एनडीए एलाइंस के घटक दलों में जेडीयू 102 से 103 सीट, भाजपा 101 से 102 सीट, लोजपा आर 25 में 28 सीट, जीनतराम मांझी का हिन्दुस्तान आवाम मोर्चा 6 से 7 सीट, और राष्ट्रीय लोकदल मोर्चा 4 से 5 सीटों पर अपने प्रत्याशी खड़े करेंगे। महागठबंधन के घटक दलों में आरजेडी, कांग्रेस और वामपंथी पार्टी के बीच सीटों का बंटवारा 2020 के चुनाव परिणाम के मद्देनजर होने की संभावना ज्यादा दिख रही है। पिछले चुनाव में कांग्रेस ने 70 उम्मीद्वारों को खड़ा किया जिसमें मात्र 19 प्रत्याशियों ने चुनाव जीता। कांग्रेस के मुकाबले वामपंथी दलों का प्रदर्शन बेहतर रहा जिनके 29 प्रत्याशियो में से 16 प्रत्याशियों ने चुनाव जीता।

तय होगा राज्य का भविष्य

बहरहाल बिहार विधानसभा चुनाव में सीटों का बंटवारा के बाद चुनाव में भितरघात के चलते हिंसक घटनाएं आम हो गयी हैं। चुनाव पूर्व मतदाता सूची की शुद्धता को लेकर चुनाव आयोग ने जो क़दम उठाए हैं उनके चलते महागठबंधन दलों ने न केवल आपत्ति जताई बल्कि आयोग के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में गुहार लगाई लेकिन नतीजा सिफर ही रहा। बिहार की राजनीति में हिंसात्मक वारदातों के चलते वह एक फिसड्डी राज्य बनकर रह गया है। आर्थिक रूप से बिहार कमजोर राज्य बन गया है। बिहार विधानसभा चुनाव इसी वर्ष अक्टूबर नवम्बर में होने जा रहे हैं। क्षेत्रियता और जातिवाद संकीर्णता को समेटे हुए विधानसभा चुनाव में बिहार अपना कैसा भविष्य बनाएगा यह तो समय ही तय करेगा।

मध्य प्रदेश निवेश का नया डेस्टिनेशन

मध्यप्रदेश को औद्योगिक और रोजगार संपन्न राज्य बनाएंगे: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हमारे उद्योग और कारखाने मंदिरों की तरह हैं, जो लोगों के कष्ट मिटाते हैं। मध्यप्रदेश में उद्योगों का निरंतर जाल फैलाया जा रहा है। प्रदेश के युवाओं को पलायन की आवश्यकता नहीं है, नए उद्योग शुरू होने से प्रदश में तेजी से समृद्धि आएगी। युवाओं को रोजगारपरक उद्योगों में प्रोत्साहन देते हुए 5 हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की जाएगी। मध्यप्रदेश को औद्योगिक और रोजगार संपन्न राज्य बनाएंगे और मध्यप्रदेश देश का नंबर एक राज्य होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भोपाल के निकट अचारपुरा औद्योगिक क्षेत्र में 416 करोड़ रुपए निवेश वाली 6 नई औद्योगिक इकाईयों के भूमि-पूजन समारोह को संबोधित करते हुए यह बाते कही। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अचारपुरा विशेष औद्योगिक केन्द्र के रूप में उभरेगा। उन्होंने अचारपुरा औद्योगिक क्षेत्र एक्सटेंशन फेज-3 (ग्राम हज्जामपुर) का शिलान्यास भी किया, जो 31.21 हेक्टेयर क्षेत्र में विकसित होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में दुनिया के बड़े-बड़े उद्योगपति उद्योग लगाने के लिए आ रहे हैं। अचारपुरा औद्योगिक क्षेत्र में आज हर पीढ़ी के उद्यमी हैं। जहां गोकलदास एक्सपोर्टस प्रा.लि. के प्रभात सिंह उपस्थित हैं वहीं सिनाई हेल्थकेयर के युवा आदित्य शर्मा और एसेड्स प्राइवेट लिमिडेट के रौनक चौधरी की उपस्थिति प्रसन्नता प्रदान कर रही है। डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश सहित देशभर में उद्योग-व्यापार का वातावरण बना है। मध्यप्रदेश में उद्योग प्रारंभ करने के लिए छोटे-बड़े उम्र की कोई सीमा नहीं है और सरकार के द्वार सभी के लिए खुले हैं।

अमेरिका समेत अन्य देशों होगा निर्यात

उन्होंने कहा कि खुशी का विषय है कि अचारपुरा की फैक्ट्रियों में ऐसी जैकेट बनाई जा रही हैं जो अमेरिका और अन्य देशों में निर्यात होती हैं। मध्यप्रदेश की प्रतिभाएं इन उत्पादों को तैयार कर विश्व में पहुंचा रही हैं। चीन जैसा देश हमारे कॉटन को बेच रहा है। मध्यप्रदेश की कपास की गुणवत्ता विश्व विख्यात है। डॉ.

यादव ने कहा कि मेहनत के मंदिर हमारे कारखाने इस बात के प्रतीक हैं कि वे सभी की तकलीफें दूर करते हैं। उद्योगपतियों की पूंजी और युवाओं का परिश्रम मिलकर अच्छा परिणाम देता है। राज्य सरकार ने देश के अलग-अलग शहरों में उद्योगों की स्थापना के लिए रोड शो आयोजित कर निवेशकों को आकर्षित किया है। राज्य सरकार भारत ही नहीं यूके, दुबई, स्पेन, जर्मनी, जापान सहित अनेक देशों से निवेश लेकर आई हैं।

6 नई औद्योगिक इकाईयों का किया भूमि-पूजन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहां 6 नई औद्योगिक इकाईयों ऐसेड्स प्राइवेट लिमिटेड, सिनाई हेल्थ केयर, गोकुलदास एक्सपोर्ट, इंडो एकॉर्ड अपरल्स, थिंक गैस एवं समर्थ अग्रीटेक का रिमोट दबाकर भूमि-पूजन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि एक सप्ताह के अंदर अचारपुरा में पुलिस चौकी काम करना शुरू कर देगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्य म में उपस्थित आईजी (पुलिस) को इस चौकी पर महिला पुलिसकर्मियों को तैनात करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अचारपुरा में गोकलदास गारमेंट इकाई का भ्रमण किया। उन्होंने यहां कार्य करने वाली बहनों से बातचीत की और उनका उत्साहवर्धन किया।

रोजगार के नए अवसरों का हो रहा सृजन: काश्यतप- एमएसएमई और भोपाल जिले के प्रभारी मंत्री चेतन्य कुमार काश्यप ने कहा है मुख्यमंत्री डॉ. यादव के कुशल नेतृत्व में यह परिवर्तन हुआ है। रोजगार के नए अवसर सृजित हो रहे हैं। अचारपुरा औद्योगिक क्षेत्र नई ऊंचाइयों पर पहुंच रहा है। गोकलदास एक्सपोर्टस प्रा.लि. में क्षेत्र की लगभग 2500 महिलाएं दक्षता से कार्य कर रही हैं। मध्यप्रदेश के युवा उद्योगपति बनकर यहीं उद्योग स्थापित कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव हाल ही दुबई और स्पेन की यात्रा से आए हैं। वे निरंतर उद्योगपतियों से संवाद कर रहे हैं जिससे औद्योगिक परिदृश्य बदला है एवं मध्यप्रदेश का स्थान विश्व में ऊंचा उठ रहा है। प्रदेश में सम्पूर्ण विकास की अवधारणा बनी है। कृषि एवं औद्योगिक विकास के साथ रोजगार के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं।प्रदेश में उद्योगपतियों की आवश्यकताओं के आधार पर औद्योगिक नीतियां बनाई गई हैं और निरंतर उद्योगपतियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। यही कारण है कि आज नवीन औद्योगिक इकाइयों का भूमिपूजन हो रहा है और अनेक निवेशकों को उद्योग के लिए भूमि आवंटन के आशय-पत्र दिए गए हैं।

लाड़ली बहनों को अब हर महीने 1500

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अर्थव्यवस्था के मामले में भारत का नंबर दुनिया में वर्ष 2015 में 15वें स्थान पर था, अब भारत तीसरे स्थान की ओर बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री मोदी राष्ट्र में संपन्नता लाने का कार्य कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में 20 वर्ष पूर्व प्रति व्यक्ति आय 11 हजार रुपए थी, जो अब 1 लाख 52 हजार रुपए हो गई है। प्रदेश में सिंचाई का रकबा बढ़ाकर 55 लाख हेक्टेयर है जिसे बढ़ाकर 100 लाख हेक्टेयर करेंगे। प्रदेश की सभी पात्र लाड़ली बहनों को दीपावली के बाद 1500 रुपए की राशि हर माह दी जाएगी। सावन का महीना है, बहनों को शगुन की राशि भी देंगे। लाड़ली बहनों की राशि साल दर साल बढ़ाएंगे और इसे वर्ष 2028 तक बढ़ाकर 3000 रुपए तक ले जाएंगे।

अचारपुरा राज्य का सक्रिय और आदर्श औद्योगिक केंद्र

औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम प्रमुख सचिव राघवेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि अचारपुरा औद्योगिक क्षेत्र अब राज्य का एक सं य और आदर्श औद्योगिक केंद्र बन चुका है। उन्होंने बताया कि 100 से अधिक औद्योगिक इकाइयों की उपस्थिति और 4000 से अधिक प्रत्यक्ष रोजगार इसके विकासशील स्वरूप का प्रमाण है। ग्राम हज्जामपुरा फेज़-3 में 15.61 करोड़ रु. की लागत से विकसित होने वाले नए औद्योगिक पार्क से इस क्षेत्र में मल्टी-सेक्टर इकाइयों को प्रोत्साहन मिलेगा।

गोकुलदास एक्सपोर्ट्स 2 इकाई लगाकर 2500 बहनों को देगा रोजगार: गोकुलदास एक्सपोर्ट्स के डायरेक्टर प्रभात सिंह ने कहा कि कंपनी देशभर में 36 इकाइयाँ संचालित कर रही है, जिनमें से एक कीनिया में भी स्थित है। वर्तमान में उनकी इकाई में 2500 महिलाएं कार्यरत हैं। उन्होंने बताया कि अचारपुरा क्षेत्र में एक और इकाई स्थापित करने जा रहे हैं, जहां लगभग 2500 बहनों को और रोजगार मिलेगा। सिंह ने कहा कि मध्यप्रदेश का निवेश फ्रेंडली वातावरण, निवेशक-हितैषी नीति और मजबूत औद्योगिक ईकोसिस्टम उन्हें इस क्षेत्र में और अधिक फैक्ट्रियाँ स्थापित करने के लिए प्रेरित कर रहा है। प्रवेश में अधिक से अधिक इंडस्ट्री स्थापित करेंगे। उन्होंने कहा कि उनका प्रयास रहेगा कि अचारपुरा क्षेत्र को महिला सशक्तिकरण और औद्योगिक उत्पादन दोनों के लिए एक मॉडल के रूप में स्थापित किया जाए।

सभी अनुमतियों का तुरंत मिल जाना सराहनीय :आदित्य शर्मा- सिनाई हेल्थ केयर के डायरेक्टर आदित्य शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के सतत प्रयासों से मध्यप्रदेश में निवेश का सकारात्मक वातावरण बना है। शर्मा ने भूमि आवंटन से लेकर सभी अनुमतियों के मिलने की प्रक्रिया को तेज और पारदर्शी बताया और मुख्यमंत्री एवं उनकी टीम को इसके लिए धन्यवाद दिया।

धनखड़ का त्याग पत्र

जगदीप धनखड़ ने उपराष्ट्रपति का पद त्याग दिया है। अचानक हुए इस घटना' म ने राजनीतिक विश्लेषकों को भी चौंका दिया। धनखड़ ने उपराष्ट्रपति के पद से इस तरह इस्तीफा क्यों दिया? इसके पीछे की वजह क्या है? इन सवालों का सही उत्तर सरकार और धनखड़ दे सकते हैं, लेकिन दोनों तरफ अभी चुप्पी है। वहीं, सियासी गलियरों में इसको लेकर अटकलों का बाजार गर्म हैं।

सत्र के पहले ही दिन इस्तीफा

संसद के मानसून सत्र के पहले ही दिन 21 जुलाई की रात में उपराष्ट्रपति के पद से इस्तीफा दे दिया। इससे पहले वे दिनभर राज्यसभा की कार्यवाही में शामिल हुए। शाम को राज्यसभा सदस्यों के साथ मुलाकात भी की, लेकिन किसी के साथ इस्तीफे की चर्चा नहीं की। रात में अचानक वे इस्तीफा लेकर राष्ट्रपति भवन पहुंच गए और कुछ देर बाद ही सोशल मीडिया में इस्तीफा वायरल भी कर दिया गया।

क्या पहले से पद छोड़ने का मन बना चुके थे धनखड़

धनखड़ के इस्तीफे को लेकर सियासी गलियारों में कई तरह की चर्चा है। कुछ लोग कह रहे हैं धनखड़ ने इस्तीफ दिया नहीं लिया गया। वहीं, कुछ का अनुमान है कि धनखड़ ने काफी पहले इस्तीफा की तैयारी कर ली थी। इसके पक्ष में तर्क यह दिया जा रहा है कि 20 जुलाई को उनकी पत्नी डॉ. सुदेश धनखड़ का जन्मदिन था। इस अवसर पर बड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इमसें करीब 800 लोग शामिल हुए। इसमें पक्ष-विपक्ष के नेता के साथ राज्यसभा सचिवालय के छोटे-बड़े सभी अधिकारी और कर्मचारी शामिल थे।

चर्चित रहा बंगाल के राज्यपाल के रुप में कार्यकाल

वकालत से राजनीति में आए धनखड़ 1989-90 में जनता दल की टिकट पर राजस्थान की झुझुनू सीट से सांसद चुने गए। केंद्र की चंद्रशेखर सरकार में संसदीय कार्यमंत्री रहे। 1993 में वे किशनजंग सीट से विधायक चुने गए। धनखड़ का पश्चिम बंगाल के कार्यपाल के रुप में कार्यकाल बेहद चर्चा में रहा। 2019 में उन्हें बंगाल के राज्यपाल बनाया गया और 2022 में उपराष्ट्रपति बनने तक वे राज्यपा के पद पर रहे।

इस्तीफा देने वाले पहले उपराष्ट्रपति

धनखड़ भारत 14वें उपराष्ट्रपति थे। 2022 में 11 अगस्त को उन्होंने उपराष्ट्रपति का पद ग्रहण किया था और 22 जुलाई 2025 को पद छोड़ दिया। ऐसा करने वाले वे देश के पहले उपराष्ट्रपति हैं। धनखड़ से पहले भारत के किसी भी उपराष्ट्रपति ने इस्तीफा नहीं दिया था। इससे पहले 1967 में उपराष्ट्रपति चुने गए वीवी गिरि 1969 में पद से इस्तीफा दिया था, लेकिन उन्होंने यह इस्तीफा राष्ट्रपति बनने के बाद दिया था। जगदीप धनखड़ जी को भारत के उपराष्ट्रपति सहित कई भूमिकाओं में देश की सेवा करने का अवसर मिला है. मैं उनके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूं।

“उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के इस्तीफे पर राज्यसभा नेता और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि इस्तीफे की सही वजह केवल उपराष्ट्रपति ही बता सकते हैं । हमें इस पर कुछ नहीं कहना है। या तो सरकार जानती है या वह जानते हैं। उनका इस्तीफा स्वीकार करना या न करना सरकार पर निर्भर है।

रिकार्ड वाले CS अमिताभ जैन

आईएएस अमिताभ जैन रिकार्डधारी मुख्य सचिव हैं। राज्य के 12वें मुख्य सचिव के रुप में उनका कार्यकाल चार साल चार महीने से ज्यादा का हो गया है। इससे पहले राज्य में किसी भी मुख्य सचिव का कार्यकाल इतना लंबा नहीं रहा है। इतना ही नहीं मुख्य सचिव के पद पर एक्सटेंशन पाने वाले वे प्रदेश के पहले मुख्य सचिव बन गए हैं। 30 जून 2025 को सेवानिवृत्ति के दिन ही सरकार ने उनका कार्यकाल तीन महीने बढ़ा दिया। वित्त विभाग की जिम्मेदारी संभालते हुए राज्य के लिए सबसे ज्यादा बजट तैयार करने का रिकार्ड भी रिकार्ड उनके नाम पर ही है।

छत्तीसगढ़िया आईएएस

अमिताभ जैन का जन्म 21 जून 1965 को बालोद (तब दुर्ग) जिले के दल्लीराजहरा में हुआ था। उनकी स्कूली शिक्षा दल्लीराजहरा से ही हुई। वे प्रारंभ से ही मेधावी छात्र रहे। अविभाजित मध्यप्रदेश माध्यमिक बोर्ड के वे टॉपर रहे। भोपाल से इंजीनियरिंग करने के बाद आईआईटी दिल्ली में भी पढ़ाई की। वे पांच जिलों के कलेक्टर रहे। सात साल भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर काम किए। इस दौरान वे लंदन हाई कमिशन में भी पोस्टेड रहे।

जबलपुर में मिली पहली पोस्टिंग

1998 बैच के आईएएस अमिताभ जैन की पहली पोस्टिंग अविभाजित मध्यप्रदेश के जबलपुर में सहायक कलेक्टर के रूप में हुई। वहां 1 जून 1990 से 1 अगस्त 1991 तक पदस्थ रहे। दूसरी पोस्टिंग नीमच एसडीएम के तौर पर एक अगस्त 1991 से 1 जुलाई 1993 तक रही। सरगुजा में प्रोजेक्ट अधिकारी बनाए गए। 1 मार्च 1994 से 1 जून 1996 तक ग्वालियर में एडिशनल कलेक्टर रहे। एक जून 1996 को ही ग्वालियर में सीईओ बन गए।

कलेक्टरर के रुप में रायगढ़ पहला जिला

कलेक्टर के रूप में अमिताभ जैन को पहली पदस्थापना 1 फरवरी 1997 को रायगढ़ जिले में मिली। दूसरा जिला छतरपुर रहा फिर वह होशंगाबाद के कलेक्टर रहे। राजगढ़, नीमच जिले में भी कलेक्टरर रहें। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद 1 नवंबर 2000 को रायपुर कलेक्टर बनाए गए। 15 दिसंबर 2003 तक रायपुर में रहे। 21 मार्च 2004 को फिर से रायपुर कलेक्टर बने।

अब तक के मुख्य सचिव

अरुण कुमार	30 अक्टूएबर 2000 से 31 जनवरी 2003
सुयोग्यम कुमार मिश्रा	31 जनवरी 2003 से 20 जून 2004
एके विजयवर्गीय	20 जून 2004 से 7 नवंबर 2005
आरपी बगई	8 नवंबर 2005 से 31 जनवरी 2007
शिवराज सिंह	01 फरवरी 2007 से 31 जुलाई 2008
पी.जाय उमेन	31 जुलाई 2008 से 7 फरवरी 2012
सुनील कुमार	28 फरवरी 2014 से 28 फरवरी 2014
विवेक ढांढ	28 फरवरी 2014 से 11 जनवरी 2018
अजय सिंह	11 जनवरी 2018 से 2 जनवरी 2019
सुनील कुजूर	2 जनवरी 2019 से 31 अक्टू बर 2019
आरपी मंडल	30 नवंबर 2020 से 30 नवंबर 2020

कर्मचारियों का हल्ला बोल, मोदी की गारंटी लागू करने की मांग

विधानसभा चुनाव 2023 में भाजपा ने अपना घोषणा पत्र मोदी की गारंटी की गारंटी के नाम से जारी किया था। इसमें प्रदेश के शासकीय सेवकों के लिए भी कई वादें किए गए थे। कर्मचारी नेताओं का कहना है कि सरकार बनने के करीब 18 माह बाद भी ज्यादातर वादें पूरे नहीं हुए हैं। इसको लेकर प्रदेश के विभिन्न कर्मचारी संगठनों के संयुक्त संगठन छत्तीसगढ़ कर्मचारी- अधिकारी फेडरेशन ने मोर्चा खोल दिया है।

16 जुलाई को किया प्रदेशभर में प्रदर्शन

फेडरेशन के आह्वान पर 16 जुलाई को कर्मचारी संगठनों ने प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन ब्लॉक से लेकर जिला मुख्यालय तक किया गया। इसका असर बस?तर से लेकर सरगुजा संभाग तक दिखा। प्रदर्शन के दौरान शासकीय सेवकों की तरफ से मांगों का ज्ञापन भी सौंपा गया। इसके जरिये शासकीय सेवकों ने अपनी मांग सरकार तक पहुंचा दी। अब अलगे चरण के आंदोलन से पहले सरकार की प्रतिि या का इंतजार कर रहे हैं।

“

विधानसभा चुनाव में प्रदेश के कर्मचारियों के लिए प्रमुख वादे को मोदी की गारंटी के रूप में प्रचार-प्रसार किया गया था। इसमें प्रदेश के शासकीय सेवकों से कई वादे किए गए थे, जो अब तक पूरे नहीं हुए हैं। शासकीय सेवकों की 11 सूत्रीय मांगों को लेकर फेडरेशन के आह्वान पर 16 जुलाई को प्रदेशव्यापी प्रदर्शन किया गया। इस दौरान ब्लॉक और जिला स्तर पर ज्ञापन सौंप कर मागें सरकार तक पहुंचा दी गई है। यदि सरकार ने समाधान कारक निर्णय नहीं लिया तो 22 अगस्त 25 को कलम बंद-काम बंद हड़ताल होगा।

कलम वर्मा, प्रांतीय संयोजक छत्तीसगढ़
कर्मचारी- अधिकारी फेडरेशन

यह है 11 सूत्रीय मांग

- केंद्र सरकार के समान कर्मचारियों और पेंशनरों को देय तिथि से महंगाई भत्ता (डीए) लागू किया जाए।
- डीए एरियर्स की राशि कर्मचारियों के जीपीएफ खाते में समायोजित की जाए।
- सभी कर्मचारियों को चार स्तरीय समयमान वेतनमान दिया जाए।
- विभिन्न वर्गों की वेतन विसंगतियों को दूर करने पिंगुआ कमेटी की रिपोर्ट सार्वजनिक किया जाए।
- पुरानी पेंशन योजना की बहाली पर गंभीर पहल हो।
- सहायक शिक्षकों एवं सहायक पशु चिकित्सा अधिकारियों को तृतीय समयमान वेतनमान दिया जाए।
- अनुकंपा नियुक्ति नियमों में 10 प्रतिशत सीलिंग में शिथिलीकरण की जाए।
- प्रदेश में कैशलेश सुविधा लागू की जाए।
- अर्जित अवकाश नगदीकरण 300 दिवस की जाए।
- दैनिक,अनियमित,संविदा कर्मचारियों को नियमित करने की ठोस नीति बने।
- सभी विभागों में समानता लाते हुए सेवानिवृत्त आयु 65 वर्ष की जाए।

महंगी हुई बिजली

छत्तीसगढ़ में 1 जुलाई से सभी श्रेणी की बिजली महंगी हो गई है। घरेलू बिजली की दरें 10 से 20 पैसे और कृषि पंप की दर 50 पैसे प्रति यूनिट बढ़ गई है। उद्योगों की बिजली दरों में भी 10 पैसे की बढ़ोतरी की गई है। वहीं, मिनी स्टील, रोलिंग मिल और फेरो एलॉय जैसे ऊर्जा-गहन उद्योगों की दरों में कटौती की है।

बिजली की औसत दर 7.02 पैसे

विद्युत नियामक आयोग ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए बिजली की औसत प्रदाय दर 7.02 रुपए प्रति यूनिट अनुमानित की है।

घरेलू बिजली दर

यूनिट	पुरानी दर	नई दर
0-100	3.90	4.10
101-200	4.10	4.20
201-400	5.50	5.60
401-600	6.50	6.60
600 से अधिक	8.10	8.30

गैर घरेलू उपभोक्ता: गैर घरेलू उपभोक्ताओं की बिजली दरों में 25 पैसे प्रति यूनिट की वृद्धि की गई है। इस श्रेणी में अस्थाई कनेक्शन पर भी नार्मल टैरिफ का 1.5 गुना टैरिफ के स्थान पर नार्मल टैरिफ का 1.25 गुना टैरिफ लागू किया गया है।

लगभग चौबीस घंटे बिजली

राज्य के शहरी क्षेत्रों में औसतन 23.85 घंटे/दिन और ग्रामीण क्षेत्रों में 23.45 घंटे/दिन बिजली आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है। विशेष रूप से कृषि फीडरों में 18 घंटे प्रतिदिन की आपूर्ति दी जा रही है, जो देश के सभी राज्यों में सर्वाधिक आंकड़ों में शामिल है। तकनीकी और वाणिज्यिक हानि को 2020-21 में 23.14 प्रतिशत से घटाकर 2024-25 में 13.79 प्रतिशत हो गया है।

शराब फैक्ट्री में पानी घोटाला!

न्यायधानी बिलासपुर में पहली बार शराब कारखाने में पानी घोटाला सामने आया है। चौंकाने वाली बात यह है कि यहां बीते 27 साल से यह गड़बड़ी चल रही है और विभागीय अफसर केवल नोटिस- नोटिस का खेल खेलते हुए अब तक 327 नोटिस कारखाना मालिक को दे चुके हैं। दिलचस्प यह है कि बात नोटिस से आगे बढ़ी ही नहीं और अफसर इस कारखाने पर बकाया करीब 90 करोड़ रुपये में से एक रुपये भी नहीं वसूल सके हैं। जाहिर है, बिना संरक्षण यह घोटाला हो ही नहीं सकता।

साय सरकार में शराब घोटाले पर काफी सख्त कार्रवाई की गई है और अब तक जांच के बाद गिरफ्तारियों का दायरा बढ़ता ही जा रहा है। सरकार ने किसी तरह के भ्रष्टाचार या लापरवाही पर सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी है। इसके विपरीत बीते 27 सालों से कोटा विकासखंड की रतनपुर तहसील के डेरकाबांधा में वेलकम डिस्टलरी में पानी घोटाला चल रहा है।

इस तीन दशक की अवधि में अधिकारी केवल नोटिस जारी करते रहे और नोटिस की संख्या भी 327 पहुंच चुकी है। मजे की बात यह है कि नोटिस के साथ अफसर अपने उच्च अधिकारियों से मार्गदर्शन भी मांगते रह गए, मगर मजाल कि डिस्टलरी से एक रुपये भी वसूल सकें। अफसर अपने बचाव में यही कह रहे कि प्रक्रिया चल रही है। अब उनसे कोई पूछे कि 27 साल में भी प्रक्रिया जहां की तहां क्यों खड़ी हुई है।

क्या है मामला

दरअसल यह सरकारी नियम है कि भूमिगत जल का औद्योगिक उपयोग करने के लिए सरकार या प्रशासन से अनुमति लेनी होती है। इस अनुमति के बाद जितने जल का दोहन किया जाता है, उसका टैक्स भी जमा करना होता है। चौंकाने वाली बात यह है कि वेलकम डिस्टलरी ने कभी भूमिगत जल का उपयोग करने के लिए अनुमति ही नहीं ली। जब अनुमति ही नहीं ली तो फिर टैक्स कहां से मिलता? इस तरह 27 साल से डिस्टलरी बिना पैसे दिए जल का इस्तेमाल निर्बाध रूप से करता आ रहा है।

रोक तक का आदेश नहीं

अफसरों का तर्क है कि नोटिस में जितना पानी लिया गया है, उससे तीन गुना अधिक का बिल बना कर डिस्टलरी को दिया गया है। मतलब अफसर बता रहे हैं कि उनकी ओर से कोई संरक्षण नहीं है, वे तो अधिक से अधिक पैसा लेना चाहते हैं। अब उनसे यह भी सवाल किया जाना चाहिए कि 27 साल में किसी अफसर ने इस डिस्टलरी को आदेश दिया है कि वह पानी का उपयोग नहीं कर सकता। जाहिर है, अफसरों ने पानी के उपयोग करने पर रोक तक का आदेश जारी नहीं किया है।

राजस्व वसूली, मतलब हाथी चाल

जल संसाधन विभाग के कार्यपालन अभियंता कोटा के जिम्मे यह डिस्टलरी आता है। विभाग के अफसरों ने तर्क दिया है कि उन्होंने राजस्व वसूली तहसीलदार के जरिए करने के लिए कलेक्टर को फाइल भेज दी है। हैरत की बात यह है कि निचले स्तर के अफसरों ने जिला स्तर के अधिकारी से लिखित में तीन बार मार्गदर्शन मांगा है, मगर मार्गदर्शन देने तक के लिए अफसरों के पास समय नहीं है। सभी जानकार जानते हैं कि राजस्व वसूली की प्रक्रिया हाथी चाल की तरह चलती है, इसकी प्रक्रिया शुरू तो हो जाएगी, वसूली कब होगी, कोई नहीं जानता।

वेलकम डिस्टलरी के लिए बिछा रेड कार्पेट, अफसर नोटिस- नोटिस खेल रहे

89 करोड़ वसूलने के लिए अब तक 327 नोटिस

शराब घोटाले के बाद अब पानी घोटाला भी

विधायक ने उठाया मुद्दा तो हरकत में आए अफसर

वेलकम डिस्टलरी में पानी घोटाला का मामला कोटा विधायक अटल श्रीवास्तव ने उठाया है। उन्होंने विधानसभा के मानसून सत्र के लिए सवाल लगा दिया था। सवाल जब जिला प्रशासन और जल संसाधन विभाग के कार्यालय में पहुंचा तो आनन- फानन में अफसर सक्रिय हुए। विधानसभा का मानसून सत्र शुरू होने के पहले ही 20 जून को डिस्टलरी से राजस्व वसूली के लिए पत्र जारी कर दिया गया। इससे पहले किसी अफसर ने ठोस कदम नहीं उठाया था।

आखिर जिम्मेदार कौन?

कोटा के वेलकम डिस्टलरी से सरकारी पैसा नहीं वसूल पाने और पानी के अवैध उपयोग को रोक नहीं पाने के लिए आखिर कौन जिम्मेदार है? 27 साल में निश्चित रूप से राज्य में सरकार भी बदली, जिम्मेदार अफसर भी बदले और कुछ अफसर तो रिटायर भी हो चुके होंगे। प्रशासन ने किसी स्तर पर डिस्टलरी के खिलाफ कार्रवाई में उदासीनता बरतने वाले अफसरों की जिम्मेदारी तय नहीं की है। यदि जांच शुरू की जाए तो कई अफसर लपेटे में आ जाएंगे।

कितना पानी पी गया डिस्टलरी?

वेलकम डिस्टलरी के बारे में जानकारी है कि वह रोजाना 600 घनमीटर भूजल का दोहन कर रहा है। ऐसे में 27 साल का हिसाब गुणा-भाग कर निकाला जा सकता है। क्या आम आदमी को इस तरह बिना पानी लेने की छूट दी जा सकती है? निश्चित रूप से किसी निजी कंपनी को मिल इस तरह की छूट को संदेह के दायरे में ही देखा जाएगा। यह सवाल भी स्वाभाविक है कि किसी मामले में आखिर कितने नोटिस दिए जा सकते हैं? क्या 327 नोटिस देने का प्रावधान भी है?

औद्योगिक उपयोग का नियम

औद्योगिक उपयोग के लिए भूमिगत जल के उपयोग को नियंत्रित करने के लिए, केंद्रीय भूजल प्राधिकरण (सीजीडब्ल्यूए) अथवा राज्य की एजेंसी द्वारा अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) जारी किया जाता है। सीजीडब्ल्यूए, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 3(3) के तहत उद्योगों, खनन और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं द्वारा भूजल के उपयोग को विनियमित और नियंत्रित करने के लिए स्थापित किया गया है।

एनओसी (अनापत्ति प्रमाण पत्र) : उद्योगों, खनन और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को भूजल निकालने और उपयोग करने के लिए सीजीडब्ल्यूए से एनओसी प्राप्त करना आवश्यक है।

सीजीडब्ल्यूए द्वारा जारी शर्तें: एनओसी में, सीजीडब्ल्यूए द्वारा प्रस्तावक के लिए आवश्यक शर्तें निर्धारित की जाती हैं, जिनका पालन करना होता है।

जुर्माना: नियमों का उल्लंघन करने पर 50,000 रुपये से 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लग सकता है।

जल संरक्षण: उद्योगों को पानी की खपत को कम करने और अपशिष्ट जल के पुनः उपयोग के लिए उपाय करने चाहिए।

नकली खाद से अन्नदाता बदहाल

नकली खाद से हर साल लाखों एकड़ फसल नष्ट हो रही है। वहीं अन्न उत्पादन में कमी के साथ किसानों का जीवन खतरे में पड़ रहा है। बीज तो बोया था अमृतमय अन्न का, बोरी वाली खाद डाली थी फिर फसल ही चौपट हो गई। खेती की जमीन भी बंजर हो गई। जिस धरती को भारत माता कहा जाता है, उसी की कोख में आज बेहिसाब ज़हर डाला जा रहा है, कभी यूरिया के नाम पर, कभी डीएपी की थैली में, और कभी सूक्ष्म पोषक तत्वों की आड़ में। ज़हर अब खेतों में नहीं, नीति में मिलाया जा रहा है। जब मिट्टी कराहती है, तो सत्ता मौन साध लेती है। यह केवल खेती की त्रासदी नहीं, बल्कि एक जीवित सभ्यता के मूल स्तंभ किसान के खिलाफ सुनियोजित षड़यंत्र है।

-डॉ. राजाराम त्रिपाठी, संयोजक अखिल भारतीय किसान महासंघ

देश के विभिन्न हिस्सों में नकली खाद, कीटनाशक और उर्वरक अब एक संगठित आपदा का रूप ले चुका हैं। छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में खाद की हर बोरी अब किसान के लिए एक अनिश्चित दांव बन गई है। फसल बचेगी या जलेगी, यह अब उर्वरक और बीज निर्माता तय करते हैं। जो खाद खेतों को जीवन देना चाहती थी, वही अब जड़ों को मुरझा रही है। सरकारी आंकड़ों और छापों की रिपोर्टें बताती हैं कि कैसे यूरिया और डीएपी की बोरियों में चाक पावडर, पीओपी और सस्ते फिलर मिलाकर उन्हें असली बोरी में भर दिया जाता है। एक असली डीएपी बोरी की लागत जहां 1350 होती है, वहीं नकली खाद 130 मे तैयार कर लिया जाता है। यानी 10 गुना मुनाफा देता है। इस 10 गुना अंतर के मुनाफे की मलाई को एक पूरा नेटवर्क मिलकर खाता है। फैक्ट्री मालिक, ट्रांसपोर्टर, कुछ स्थानीय अधिकारी, और कई बार दुर्भाग्यवश स्वयं सरकारी तंत्र से जुड़े कुछ लोग भी शामिल रहते हैं। अप्रैल 2025 में ओडिशा के गंजाम जिले में नकली कीटनाशक के इस्तेमाल से 120 एकड़ में धान की फसल जल गई। जून 2025 में ही उत्तर प्रदेश के जालौन जिले में किसानों ने नकली खाद के विरोध में तहसील गेट पर धरना दिया, जब एक ही गांव में 200 से अधिक किसानों की फसल पीली होकर सूख गई।

छत्तीसगढ़ के बस्तर और रायगढ़ में बार-बार नकली यूरिया की बोरी सरकारी डिपो में पाए जाने की घटनाएं अब आम बात हो गई हैं। उत्तर प्रदेश के हरदोई की 2022 की वह घटना भुलाना कठिन है जब किसानों ने नकली डीएपी से फसल बुआई नहीं होने पर सामूहिक आत्महत्या की चेतावनी दी थी। प्रश्न यह है कि नकल का बाजार कैसे पनप रहा है। साल दर साल नकली उर्वरकों का गोरखधंधा कैसे चल रहा है। जब एक किसान बोरी उठाकर ले जाता है, तो वह उस पर लिखे हर शब्द पर दिल से भरोसा करता है , वह जानता है कि उसमें विज्ञान है, सरकार की मुहर है, और उस खाद से ही उसके बच्चों के भोजन की

गारंटी है। लेकिन जब वही खाद खेत को बंजर कर दे, धरती की कोख को बांझ बना दे और सरकार जांच की प्रक्रिया में महीनों सालों बीता दे, तो इसे त्रासदी नहीं,,, अन्नदाता के खिलाफ अन्याय है।

राजस्थान के मंत्री किरोड़ी लाल मीणा की सक्रिय छापेमारी निश्चित रूप से सराहनीय है। अब निगाहें केंद्र सरकार पर हैं,, क्योंकि देश के कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान स्वयं राजनीति के साथ-साथ खेती-किसानी की ज़मीन से गहराई से जुड़े हैं। यह संकट उनके लिए केवल प्रशासनिक नहीं, कृषि निष्ठा की अग्निपरीक्षा भी बनने जा रहा है। क्या यह संभव नहीं कि ईडी, सीबीआई, एनआईए, विजिलेंस, डीआरआई, इनकम टैक्स और चुनावी मौसम में अद्भुत सक्रियता दिखाने वाली तमाम जांच- एजेंसियां कुछ समय के लिए नकली खाद माफिया के पीछे भी लगा दी जाएं? जो संस्थाएं नेताओं के दशकों पुराने लेन-देन तक अंतर्यामी दृष्टि से पहुँच जाती हैं, क्या वे यह नहीं जान सकतीं कि नकली यूरिया की थैली कहां छप रही है और किसके आशीर्वाद से बिक रही है? किसान तो बस इतना ही चाहते हैं कि जो ईडी विपक्ष की नस-नस टटोलती है, वह ज़रा खाद-बीज के माफियाओं की भी थोड़ी जाँच कर दे–कम से कम भारत की मिट्टी तो बचे!

> भारत की आत्मनिर्भरता का पहला आधार किसान का आत्मविश्वास है। जब तक किसान को सच्चा बीज, असली खाद और ईमानदार व्यवस्था नहीं मिलेगी, तब तक आत्मनिर्भरता केवल नारे में सिमटी रहेगी। यह विषय अब केवल कृषि का नहीं, राष्ट्र की चेतना का है। सरकार, समाज और वैज्ञानिक तंत्र को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि भारत की धरती माता केवल नक्शे में उपजाऊ न कहलाए वह हकीकत में शाश्वत अन्नपूर्णा बनी रहे।

दुखद यह है कि नकली खाद के नाम पर किसान को ही दोषी बना दिया जाता है गलत जगह से खरीदा, जांच नहीं की, आदि आदि। समय पर शिकायत क्यों नहीं की। लेकिन कोई यह नहीं पूछता कि बिना बीआईएस मार्किंग के खाद कैसे खुलेआम बाजार में बिक रही है, और मंडियों में निरीक्षण की ज़िम्मेदारी जिनकी है, वे किस नींद में हैं। कई जिलों में खाद परीक्षण प्रयोगशालाएं वर्षों से निष्ि य हैं। प्रमाणित खाद की आड़ में अनसर्टिफाइड कंपनियाँ नए नामों से हर साल बाज़ार में अपना माल बेचती है और गायब हो जाती है। सरकार उन्हें ब्लैकलिस्ट करके अपनी जिम्मेदारी पूरी मान लेती है।

यह केवल आर्थिक अपराध नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक अपराध भी है। भारतीय कृषि केवल उपज नहीं, बल्कि एक परंपरा है। हमारे उपनिषदों में अन्न को ब्रह्मकहा गया अन्नं ब्रह्मेति व्यजाना (तैत्तिरीयोपनिषद्)। जब हम किसान को नकली खाद देते हैं, तो हम केवल उसकी फसल को नहीं, उसकी आस्था और श्रम को अपमानित करते हैं। हर बार जब एक किसान नकली खाद डालता है, तो केवल फसल नहीं जलती,, उसकी बेटी की पढ़ाई, उसके पिता की दवा और उसकी उम्मीदों की लौ भी बुझ जाती है। अब समय आ गया है कि सरकार खाद पर केवल चमकदार पैकिंग और विज्ञापनों से नहीं, ज़मीन पर सखूत निगरानी कर किसानों को नकली उर्वरकों के कहर से बचाए।

खाद की हर बोरी पर क्त कोड अनिवार्य हो, जिससे उसकी ट्रेसबिलिटी बनी रहे। ब्लैकलिस्टेड कंपनियों को नाम बदलकर फिर से व्यापार करने से रोकने के लिए कानूनी रोक लगे। हर जिले में खाद परीक्षण के लिए स्वतंत्र उड़नदस्ते हों। नकली खाद से जुड़े मामलों के लिए फास्ट ट्रैक न्यायाधिकरण गठित हों , जिनमें किसानों की भी सहभागिता सुनिश्चित हो, जिसमें अपराधिक प्रकरण के साथ जुर्माना का प्रावधान हो। किसानों को प्रमाणित खाद की पहचान के लिए प्रशिक्षित किया जाए, ताकि वह पैकिंग से नहीं, गुणवत्ता से पहचाने। हमें पैकेट चमके, चाहे खेत झुलसे वाली व्यवस्था को बदलना होगा।

चैतन्य बघेल गिरफ्तार

छत्तीसगढ़ के चर्चित कथित शराब घोटाला में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के पुत्र चैतन्य बघेल को गिरफ्तार कर लिया है। ईडी ने 18 जुलाई को भिलाई-3 स्थित बघेल के आवास पर छापा मारा, उसी दिन चैतन्य का जन्मदिन था। इससे पूर्व सीएम बघेल को दुखी तो हुए लेकिन उन्होंने इसको लेकर भाजपा पर जमकर निशाना साधा। वहीं, छत्तीसगढ़ से लेकर नई दिल्ली कांग्रेस पार्टी भी उनके साथ खड़ी नजर आई। राहुल गांधी और प्रियांका वाड्रा ने चैतन्य की गिरफ्तारी की निंदा की तो इधर, प्रदेश कांग्रेस ने 22 जुलाई को पूरे राज्य में कई स्थानों पर चक्का जाम कर आर्थिक नाकेबंदी की। इस पर भाजपा की तरफ से भी तीखा हमला हुआ है।

चैतन्य की गिरफ्तारी पर ईडी ने जारी किया बयान

चैतन्य बघेल की गिरफ्तारी के तीसरे दिन (20 जुलाई) ईडी ने एक प्रेसनोट जारी किया है। इसमें बताया है कि रायपुर जोनल कार्यालय ने चैतन्य बघेल, पुत्र भूपेश बघेल (छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री) को शराब घोटाला मामले (जो 2019 से 2022 के बीच हुआ) में धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002 के प्रावधानों के तहत 18 जुलाई को गिरफ्तार किया है। उन्हें विशेष न्यायालय (पीएमएलए), रायपुर के समक्ष पेश किया गया और न्यायालय ने 5 दिनों के लिए यानी 22 जुलाई तक ईडी की हिरासत प्रदान की है।

ईडी के अनुसार घोटाला में चैतन्य बघेल की भूमिका

ईडी ने बताया है कि जांच से पता चला है कि चैतन्य बघेल को 16.70 करोड़ रुपये की पीओसी प्राप्त हुई थी। उन्होंने इस पीओसी को मिलाने के लिए अपनी रियल एस्टेट फर्मों का इस्तेमाल किया था। यह पता चला है कि उन्होंने पीओसी की नकद राशि का उपयोग अपनी रियल एस्टेट परियोजना के विकास में किया था। पीओसी का उपयोग उनकी परियोजनाओं के ठेकेदारों को नकद भुगतान, नकदी के विरुद्ध बैंक प्रविष्टियां आदि के माध्यम से किया गया था।

शराब घोटाला में 2500 हजार करोड़ रुपए कमीशन

ईडी ने अपने प्रेसनोट में बताया है कि छत्तीसगढ़ में शराब घोटाले में आईपीसी, 1860 और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की विभिन्न धाराओं के तहत एसीबी/ईओडब्ल्यू, रायपुर, छत्तीसगढ़ द्वारा दर्ज एफआईआर के आधार पर जांच शुरू की। पुलिस जांच से पता चला है कि छत्तीसगढ़ शराब घोटाले के परिणामस्वरूप राज्य के खजाने को भारी नुकसान हुआ अनुसूचित अपराधों के कमीशन से उत्पन्न 2500 करोड़ रुपये की अपराध आय (पीओसी)।

त्रिलोक सिंह ढिल्लो से जोड़ा कनेक्शनः ईडी ने प्रेसनोट में बताया है कि त्रिलोक सिंह ढिल्लों (शराब करोबारी) नामक व्यक्ति के साथ भी मिलीभगत की और अपनी कंपनियों का उपयोग एक योजना तैयार करने के लिए किया जिसके अनुसार उन्होंने त्रिलोक सिंह ढिल्लों के कर्मचारियों के नाम पर अपने विट्ठलपुरम प्रोजेक्ट में फ्लैटों की खरीद की आड़ में अप्रत्यक्ष रूप से 5 करोड़ रुपये प्राप्त किए। बैंकिंग ट्रेल से पता चलता है कि लेनदेन की संबंधित अवधि के दौरान, त्रिलोक सिंह ढिल्लों ने अपने बैंक खातों में शराब सिंडिकेट से भुगतान प्राप्त किया था।

चैतन्य पर समन्वय करने का आरोप

ईडी ने बताया है कि इसके अलावा, उन्हें शराब घोटाले से उत्पन्न 1000 करोड़ रुपये से अधिक के पीओसी को संभालने का भी दोषी पाया गया था। वह छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के तत्कालीन कोषाध्यक्ष को पीओसी हस्तांतरित करने के लिए अनवर ढेबर और अन्य के साथ समन्वय करता था। ईडी द्वारा की गई जांच से पता चला है कि इस शराब घोटाले से प्राप्त धनराशि को आगे निवेश के लिए बघेल परिवार के प्रमुख सहयोगियों को भी सौंप दिया गया था। इस धनराशि के अंतिम उपयोग की आगे जांच की जा रही है।

शराब घोटाला में इन लोगों की हो चुकी है गिरफ्तारीः इससे पहले, अनिल टुटेजा (पूर्व आईएएस), अरविंद सिंह, त्रिलोक सिंह ढिल्लों, अनवर ढेबर, अरुण पति त्रिपाठी (आईटीएस) और कवासी लखमा (विधायक और छत्तीसगढ़ के तत्कालीन आबकारी मंत्री) को ईडी ने इस मामले में गिरफ्तार किया था।

मुझे तोड़ने की सोची-समझी कोशिश

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पुत्र की गिरफ्तारी पर बेहद आक्रामक रुख अपना लिया है। उन्होंने बेटे की गिरफ्तारी को कानूनी नहीं, राजनीतिक दबाव की साजिश करार दिया है। बघेल का कहना है कि यह मुझे तोड़ने की सोची-समझी कोशिश है। मार्च में ईडी ने हमारे घर पर छापा मारा, उसके सिर्फ 15 दिन बाद, 26 मार्च को सीबीआई ने भी रेड डाली। 10 मार्च से लेकर 18 जुलाई यानी मेरे बेटे के जन्मदिन तक उसे न कोई नोटिस दिया गया, न पूछताछ हुई. और अचानक उसे गिरफ़्तार कर लिया गया? ये कौन सा कानून है? बघेल कहते हैं कि पूरी शिकायत एक आदमी पप्पू बंसल की गवाही पर टिकी है। उसके खिलाफ गैर-जमानती वारंट है, फिर भी वो खुलेआम ईडी और सीबीआई दफ्तरों में घूम रहा है। कार्यवाही किस पर हो रही है? मेरे बेटे पर. क्या ये न्याय है?

पत्रकारों को दिया न्योताइः भूपेश बघेल ने पत्रकारों को न्योता देते हुए कहा, मेरे बेटे के जिस प्रोजेक्ट की बात हो रही है, उसमें 1300 करोड़ लगे हैं, वो प्रोजेक्ट यहां से अधिक दूर नहीं है, मैं आप सभी पत्रकार साथियों को वहां चाय पर आमंत्रित करता हूं। आप आएं और स्वयं देख लें, वहां कितने पैसे लगे हैं।

हमारे परिवार को जेल में डाला, उसकी सरकार चली गईः भूपेश बघेल ने कहा कि ईडी ने चैतन्य को उसके जन्मदिन के दिन उठाया, जिसने हमारे परिवार को जेल में डाला, उसकी सरकार चली गईत्र आप देखिए मेरे पिता को जोगी सरकार ने जेल भेजा, उनकी सरकार गई। रमन सिंह ने मुझे जेल भेजा, उनकी सरकार भी चली गई। अब मोदी ने मेरे बेटे चैतन्य को जेल में डाला है।

केवल शहजादों के लिए प्रदर्शन करती है कांग्रेस

उपमुख्यमंत्री अरुण साव का कहना है कि एक के बाद एक भ्रष्टाचार के मामले सामने आने के बाद कांग्रेस में भी भूपेश बघेल की स्वीकार्यता खत्म हो रही है। आखिर कब तक भूपेश बघेल, अपनी सरकार में हुए भ्रष्टाचारों पर पर्दा डालने के लिए ऐसे काम करेंगे? प्रदेशवासियों का समय जाया करते रहेंगे? आर्थिक नुकसान करते रहेंगे? पूरी कांग्रेस पार्टी को झोंकते रहेंगे? झूठ-पर-झूठ बोलते रहेंगे?

चोरी ऊपर से सीनाजोरीः साव ने कहा पहली बार देखा जा रहा है कि भ्रष्टाचारियों के पक्ष में आर्थिक नाकाबंदी करके निर्दोष आम जनता को सजा देने का षड्यंत्र किया गया था। जनता का धन्यवाद कि इसे विफल कर दिया।

उतर गया मुखौटा : साव ने कहा यह आश्चर्यजनक है कि भूपेश बघेल अपने बेटे की गिरफ्तारी पर कह रहे हैं कि अगर उसके दादा आज जीवित होते तो खुश होते। अनेक बार अन्याय का विरोध करते हुए वे जेल गए थे। हम सभी जानते हैं कि हिंदुत्व का विरोध कर और श्रीराम को दुष्ट कहकर, जातिगत गाली-गलौज कर नंदकुमार बघेल जेल जाते रहे हैं। तो भूपेश बघेल को क्या अब हिंदुत्व और श्रीराम आदि अन्याय लग रहे अब? मुखौटा उतर गया है। पहले कहते थे कि उनके पिताजी से वे सहमत नहीं हैं। अब नंद कुमार बघेल से सहमत हो गए?

भ्रष्टाचार को उपलब्धि मान भूपेश : साव ने कहा भूपेश बघेल तो इस बात पर भी गर्वित और आत्ममुग्ध हैं कि इस गिरफ्तारी के बाद उनके बेटे को पूरा देश जान गया है। एक बाप को अपने बेटे पर गर्व होता है जब वो डॉक्टर बने, इंजीनियर बने, उच्च अधिकारी बने, सामाजिक क्षेत्र में कार्य करते हुए प्रसिद्धि पाए मगर किसी आर्थिक अपराध में नाम शामिल होने में कोई बाप गर्व करे तो इसे आप क्या कहेंगे?

सीएम साय की चेतावनी- कुछ जेल में, कुछ और भी होंगे गिरफ्तार

दूसरी ओर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने भूपेश बघेल के बयानों को पूरी तरह नकारते हुए कहा ईडी की कार्रवाई जारी है. कई लोग जेल में हैं, कुछ जमानत पर जेल से बाहर आ गए हैं। अभी आगे-आगे देखते जाइए किसका किसका नंबर आता है।

स्टेट कैपिटल रीजन

छत्तीसगढ़ का बनेगा नया ग्रोथ इंजन

जीएस केशरवानी, उप संचालक
सुनील त्रिपाठी, सहायक संचालक

राजधानी रायपुर और उसके आस-पास का एरिया, स्टेट कैपिटल रीजन (एससीआर) के रूप में विकसित होने जा रहा है। यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ का नया ग्रोथ ईंजन बनेगा। विधानसभा में इस संबंध में विधेयक को मंजूरी मिलने के साथ ही स्टेट कैपिटल रीजन ने रफ्तार पकड़ ली है। राजधानी रायपुर सहित दुर्ग-भिलाई और नवा रायपुर अटल नगर के क्षेत्र कैपिटल रीजन में शामिल किया गया है। यह पूरा क्षेत्र राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) की तर्ज पर विकसित होगा। भौगोलिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ देश के केन्द्र में स्थित होने के साथ-साथ व्यापार, वाणि'य और उद्योग के प्रमुख केन्द्र के रूप में उभर रहा है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की यह पहल पर स्टेट कैपिटल रीजन में योजनाबद्ध और शहरी विकास की बढ़ती आवश्यकता को देखते हुए, स्टेट कैपिटल रीजन को विकसित करने की योजना बनाई गई है। इससे राजधानी और आसपास के शहरों का प्लान्ड डेव्हलपमेंट होगा। साथ ही शहरी सुविधाएं, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और वाणिज्य के लिए बेहतर और अनुकूल वातावरण तैयार होगा। इस क्षेत्र में ट्रांसपोर्ट की बेहतर कनेक्टिविटी और आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसी सुविधाएं बढ़ेंगी।

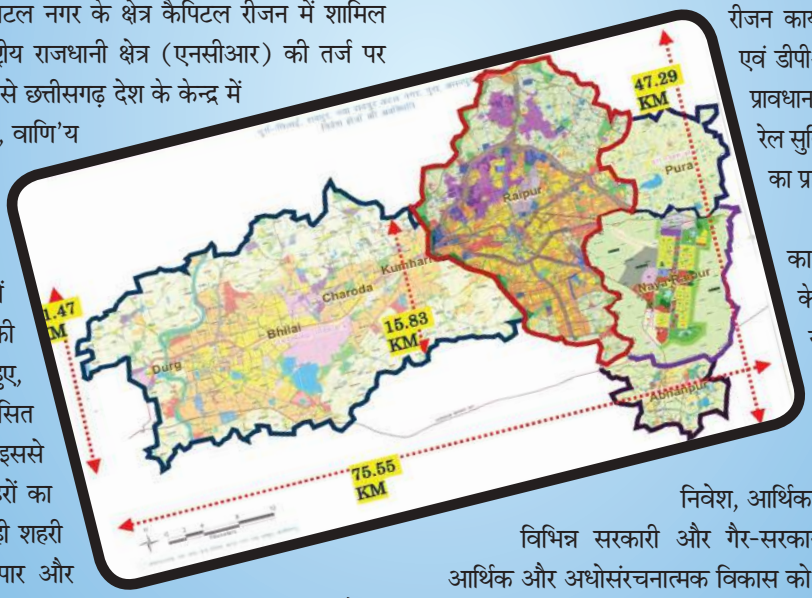

स्टेट कैपिटल रीजन में शामिल शहरों में वर्ष 2031 तक 50 लाख से अधिक की आबादी रहने का अनुमान है। बढ़ते शहरीकरण और आबादी के दबाव को कम करने तथा बेहतर नागरिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए यहां राजधानी क्षेत्र विकास प्राधिकरण का गठन करने का प्रावधान रखा गया है। यह प्राधिकरण, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, हैदराबाद महानगर विकास प्राधिकरण, मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण आदि के अनुरूप होगा। राजधानी क्षेत्र विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष मुख्यमंत्री होंगे। इसके साथ ही आवास एवं पर्यावरण, नगरीय प्रशासन एवं विकास, लोक निर्माण विभाग के मंत्री, राज्य के मुख्य सचिव सहित विभिन्न विभागों के सचिव, राज्य शासन द्वारा नामित सदस्यों में राजधानी क्षेत्र विकास प्राधिकरण का प्रतिनिधित्व करने वाले चार विधायक, स्थानीय प्राधिकरण का प्रतिनिधित्व करने वाले चार निर्वाचित सदस्य होंगे। मुख्य कार्यपालन अधिकारी, राजधानी क्षेत्र विकास प्राधिकरण इसके सदस्य संयोजक होंगे। यह प्राधिकरण भूमि का प्रभावी उपयोग और पर्यावरण अनुकूल योजनाबद्ध विकास सुनिश्चित करेगा। वर्ष 2024-25 के बजट में स्टेट केपिटल रीजन कार्यालय की स्थापना के लिए सर्वेक्षण एवं डीपीआर बनाने के लिए भी 5 करोड़ का प्रावधान किया गया है। रायपुर से दुर्ग तक मेट्रो रेल सुविधा के सर्वे कार्य के लिए भी 5 करोड़ का प्रावधान किया गया है।

राजधानी क्षेत्र विकास प्राधिकरण का उद्देश्य राजधानी और आसपास के शहरों के व्यापक विकास के लिए योजना बनाने के साथ नियामक और समन्वय सस्थान के रूप में कार्य करना है। इसके प्रमुख कार्यों में स्थानीय स्तर पर योजनाएं बनाना, निवेश, आर्थिक योजनाओं और इनका कार्यान्वयन, विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी हितधारकों के बीच समन्वय, आर्थिक और अधोसंरचनात्मक विकास को बढ़ावा देना भी है। प्राधिकरण की एक कार्यकारी समिति होगी, जिसके अध्यक्ष मुख्य कार्यपालन अधिकारी होंगे। इसके अलावा नगर तथा ग्राम निवेश के संचालक, नगरीय प्रशासन विभाग के विकास संचालक, शहरी योजनाकार, अभियंता, वित्त, संपदा, पर्यावरण नामांकित सदस्य होंगे। इसके अलावा राजधानी क्षेत्र में शामिल सभी जिलों के कलेक्टर इसके सदस्य होंगे।

स्टेट कैपिटल रीजन के विकास के लिए राज्य सरकार द्वारा राजधानी क्षेत्र विकास निधि बनाई जाएगी। इसके साथ ही एक पुनरावृत्ति निधि भी होगी। इसे राजधानी अवसंरचना परियोजनाओं के लिए विशेष उपकर लगाने की शक्ति भी होगी। यह वार्षिक बजट भी तैयार करेगा तथा राज्य सरकार को प्रत्येक वर्ष वार्षिक योजना एवं प्रतिवेदन भी प्रस्तुत करेगा।

कोयला पर सियासी कलह

छत्तीसगढ़ में कोयला खदान आवंटन को लेकर भाजपा और कांग्रेस आमने-सामने हैं। दोनों पार्टियों के नेता कोयला खदान आवंटन और पेड़ों की कटाई के लिए एक दूसरे को जिम्मेदार बता रहे हैं। मामला सरगुजा संभाग में राजस्थान सरकार की बिजली कंपनी को आवंटित कोयला खदान का है। राजस्थान सरकार ने कोयला निकालने का ठेका अडानी की कंपनी को दिया है। यह मुद्दा राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के घर ईडी का छापा और चैतन्य बघेल की गिरफ्तारी के बाद ज्यादा गरमा गया है। पूर्व सीएम का आरोप है कि कोयला खदान के लिए हो रही पेड़ कटाई का वे विरोध कर रहे हैं। इसी वजह से केंद्र सरकार ईडी के जरिये दबाव बना रही है। इसके जवाब में भाजपा ने कोयला खदान से कांग्रेस के कनेक्शन को लेकर हमला शुरू कर दिया है।

भाजपा का आरोप: कोयला आवंटन के लिए कई पत्र लिखे ,परमिशन दिलवाई

राज्य वन मंत्री केदार कश्यप ने का कहना है कि कोल ब्लॉक आवंटन को लेकर कांग्रेस पार्टी और भूपेश बघेल के झूठ का पर्दापाश हो गया है। प्रेजेंटेशन के जरिये तथ्यों और दस्तावेज दिखाते हुए कश्यप ने कहा कि कांग्रेस चोरी और सीनाजोरी का उदाहरण बार-बार प्रस्तुत कर रही है। अपने पांच साल के शासनकाल में भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ को दस जनपथ का चारागाह बना दिया था।

मंत्री कश्यप ने कहा कि शराब घोटाले, कोयला घोटाले, चावल घोटाले, गोठान घोटाले से लेकर पीएससी घोटाले तक में इसने प्रदेश के संसाधनों को जम कर लूटा था, आज इन घोटालों के आरोपी एक एक कर नप रहे हैं। सभी जेल जा रहे हैं। कश्यप ने कहा कि बेवजह जिस तरह अपराधियों के विरुद्ध हो रही कानून सम्मत कार्रवाई को कहीं और मोड़ा जा रहा है, वह दुर्भाग्यजनक और कांग्रेस में हिप्पोक्रेसी का सबसे बड़ा नमूना है।

मंत्री कश्यप ने कहा कि जब भी कॉल ब्लॉक आवंटन और पेड़ कटाई आदि पर सवाल उठता था, तो दस जनपथ के दबाव में सीधे तौर पर भूपेश बघेल बचाव में आ जाते थे। कहते थे कि कोल ब्लॉक आवंटन का विरोध करने वाले अपने-अपने घरों की बिजली बंद कर दें। सवाल यह है कि अब जब झूठे और बेबुनियाद आरोप लगा कर भूपेश अपनी कालिख धोने की कोशिश कर रहे हैं, तो क्या वह अपने घर और राजीव भवन की बिजली बंद करेंगे?

मंत्री कश्यप ने कहा कि यह तथ्य है कि न केवल भूपेश बघेल ने कोल ब्लॉक अशोक गहलोत को आवंटित किया था, बल्कि उससे पहले भी मनमोहन सिंह की सरकार में तमाम नियमों को धत्ता बताते हुए छत्तीसगढ़ के कोल ब्लॉक आवंटन की राह आसान की थी। उन्होंने कहा कि साल 2010 में केन्द्र में कांग्रेस की सरकार थी, तब कोयला मंत्रालय और पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा हसदेव अरण्य को पूरी तरह से नो-गो जोन घोषित किया गया था। उसे कांग्रेस नीत सरकार के पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने ही सबसे पहले गो एरिया घोषित किया था।

कोल ब्लॉक आवंटित हुआ तब केंद्र में थी कांग्रेस की सरकार

मंत्री कश्यप ने कहा कि 23 जून 2011 को केन्द्र में कांग्रेस की सरकार रहते ही तारा परसा ईस्ट और कांटे बेसन कोल ब्लॉक को खोलने का प्रस्ताव दिया गया। जब छत्तीसगढ़ और राजस्थान में कांग्रेस की सरकार थी, उस वक्त अडानी को दो बड़ी खदानों गारे पेलमा सेक्टर-2 और राजस्थान में केते एक्सटेंशन ब्लॉक का ऑपरेटर बनाया गया। इसी तरह भूपेश बघेल के मुख्यमंत्री कार्यकाल में ही 16 अक्टूबर 2019 को राज्य सरकार ने पर्यावरण स्वीकृति के लिए सिफारिश भेजी। मंत्री कश्यप ने कहा कि 31 मार्च 2021 को ओपन कास्ट गारे पेलमा सेक्टर-2, मांड-रायगढ़ कोलफील्ड के लिए हुआ समझौता भी सबके सामने है। इसी क्रम में 19 अप्रैल 2022 को भूपेश बघेल के मुख्यमंत्री रहते ही कांग्रेस सरकार द्वारा वन स्वीकृति स्टेज-1 और 23 जनवरी 2023 को वन स्वीकृति स्टेज-2 के लिए सिफारिश भेजी गई। मंत्री कश्यप ने कहा कि महाजेंको कोल फील्ड की स्वीकृति में तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की संलिप्तता को लेकर तब अनेक अखबारों ने समाचार भी प्रकाशित किए थे। 25 मार्च 2022 को भूपेश सरकार ने राजस्थान में अशोक गहलोत की सरकार के रहते राजस्थान को कोल माइंस का आवंटन किया था।

भाजपा का कांग्रेस से सवाल

- क्या वह मनमोहन सिंह सरकार के समय हुए निर्णयों के लिए आज माफ़ी मांगेंगे?
- क्या भूपेश बघेल यह घोषणा करेंगे कि अब कांग्रेस कभी बिजली का उपयोग नहीं करेगी, क्योंकि स्वयं यह कह चुके हैं कि विरोध करने वाले अपने घर की बिजली बंद कर दें।
- क्या कांग्रेस हर अपराधी के पक्ष में ऐसे ही खड़ी होगी, जैसे आज पूर्व मुख्यमंत्री के बेटे के लिए हुई है?

कांग्रेस का दावा : भाजपा-अडानी की करतूतें छिपाकर गलत जानकारियां दीं

भाजपा की तरफ से लगाए गए आरोपों पर कांग्रेस की तरफ से पार्टी के संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने पलटवार किया। शुक्ला का कहना है कि पूरा खेल भाजपा सरकारों का है। केंद्र की भाजपा सरकार ने राज्य की भाजपा सरकारों को खदान आवंटित किए और राज्य की भाजपा सरकारों ने अडानी को एमडीओ नियुक्त कर दिया। सबसे पहले परसा ईस्ट केते बासन और परसा कोल ब्लॉक को अनुमति देने की मांग डॉ. रमन सिंह सरकार के द्वारा की गई जिस पर मनमोहन सिंह सरकार के रहते हुए अनुमति जारी हुई लेकिन बिलासपुर के अधिवक्ता सुदीप श्रीवास्तव के द्वारा इस अनुभूति को चुनौती दी गई और 24 मार्च 2014 को नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल प्रधान पीठ दिल्ली ने यह सभी अनुमतियां रद्द कर दी। इसके बाद भी कोल ब्लॉक 2014 के पहले आवंटित हुए थे, उन सभी को सुप्रीम कोर्ट ने अपने 25 अगस्त 2014 और 24 सितंबर 2014 के फैसले से रद्द कर दिया था। अतः यह कहना कि कोई कोल ब्लॉक मनमोहन सिंह सरकार के द्वारा आवंटित था इसलिए संचालित है, यह सर्वथा गलत और गुमराह करने वाला है। मोदी की सरकार 31 मार्च 2015 को परसा ईस्ट केते बासन, परसा और केते एक्सटेंशन कोल ब्लॉक हसदेव क्षेत्र में राजस्थान विद्युत उत्पादन निगम को कोयला खनन का आवंटन वसुंधरा राजे सरकार के निवेदन पर किया था।

कांग्रेस सरकार ने किया था विरोध : शुक्ला ने दावा किया कि भूपेश बघेल सरकार ने 15 जनवरी 2019 की वन सलाहकार समिति की बैठक में परसा कोल ब्लॉक को अनुमति देने का विरोध किया था। इसके बाद भी परसा कोल ब्लॉक की प्रथम चरण वन अनुमति 22 फरवरी 2019 और पर्यावरण अनुमति 12 जुलाई 2019 दोनों जारी कर दी। कांग्रेस सरकार ने ही 7 अक्टूबर 2021 को 1995 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में हाथी अभ्यारण अधिसूचित कर बहुत बड़े हिस्से को संरक्षित किया। भूपेश बघेल सरकार के कहने पर केंद्र सरकार की कोयला नीलामी में से हसदेव क्षेत्र के कई ब्लॉक और मांड क्षेत्र के कई कोयला ब्लॉक नीलामी और आवंटन से हटाए गए।

ऐतिहासिक बस्तर दशहरा

पाट जात्रा के साथ शुरू हुआ विश्व प्रसिद्ध 75 दिवसीय उत्सव

हरियाली अमावस्या के मौके पर बस्तर की आराध्य देवी मां दंतेश्वरी मंदिर के सामने पाट जात्रा पूजा विधान के साथ ही विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक बस्तर दशहरा पर्व शुरू हो गया। बस्तर की आराध्य देवी मां दंतेश्वरी को समर्पित इस ऐतिहासिक बस्तर दशहरा पर्व के पहले पूजा विधान पाट जात्रा में रथ निर्माण के लिए बनाए जाने वाले औजार ठुरलू खोटला तथा अन्य औजारों का परम्परागत तरीके से पूजा-अर्चना कर रस्म पूरी की गई। इसके साथ ही विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक बस्तर दशहरा पर्व शुरू हो गया, जो इस वर्ष करीब 75 दिवस की अवधि तक पूरे आस्था, श्रद्धा और पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा।

बस्तर दशहरा का कार्यक्रम

05 सितंबर(शुक्रवार) को डेरी गड़ाई पूजा विधान

21 सितंबर (रविवार) को काछनगादी पूजा विधान

22 सितंबर (सोमवार) को कलश स्थापना पूजा विधान

23 सितंबर (मंगलवार) को जोगी बिठाई पूजा विधान

24 सितंबर से 29 सितंबर तक प्रतिदिन नवरात्रि पूजा और रथ परिक्रमा पूजा विधान

29 सितंबर (सोमवार) को सुबह 11 बजे बेल पूजा

30 सितंबर (मंगलवार) को महाअष्टमी पूजा विधान व निशा जात्रा पूजा विधान

01 अक्टूबर (बुधवार) को कुंवारी पूजा विधान, जोगी उठाई पूजा विधान व मावली परघाव

02 अक्टूबर (गुरुवार) को भीतर रैनी पूजा विधान व रथ परिक्रमा पूजा विधान

03 अक्टूबर (शुक्रवार) को बाहर रैनी पूजा विधान व रथ परि मा पूजा विधान

04 अक्टूबर (शनिवार) को काछन जात्रा पूजा विधान व मुरिया दरबार

05 अक्टूबर (रविवार) को कुटुंब जात्रा पूजा विधान में ग्राय देवी-देवताओं की विदाई

07 अक्टूबर (मंगलवार) को मावली माता की डोली की विदाई पूजा विधान के साथ समापन

यहां रावण नहीं मारा जाता

असत्य पर सत्य के विजय के प्रतीक, महापर्व दशहरे को पूरे देश में राम का रावण से युद्ध में विजय के रूप में विजयादशमी के दिन मनाया जाता है, लेकिन बस्तर दशहरा देश का ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व का अनूठा महापर्व है, जो असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक तो है, मगर बस्तर दशहरा में रावण नहीं मारा जाता, रामायण से इसका कोई संबंध नहीं है। यह बस्तर की आराध्या देवी मां दंतेश्वेरी सहित अनेक देवी-देवताओं की 75 दिनों तक पूजा-अर्चना होती है।

सड़कों का मजबूत नेटवर्क

18,215 करोड़ रुपये लागत की 37 सड़क परियोजनाओं पर चल रहा काम

राष्ट्रीय राजमार्गों के उन्नयन के लिए 5353 करोड़ रुपए मंजूर

रायपुर-विशाखापट्टनम और रायपुर-धनबाद आर्थिक गलियारे हो रहें तैयार

छत्तीसगढ़ में सड़क नेटवर्क का तेजी से विस्तार किया जा रहा है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की पहल पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए राज्य में दो इकोनॉमिक कॉरिडोर सहित रा'य के दूरस्थ एवं पिछड़े क्षेत्रों में सड़कों का मजबूत नेटवर्क बनाने का काम शुरू हो गया है। छत्तीसगढ़ में औद्योगिक गतिविधियों में तेजी लाने के लिए इंडस्ट्रियल कॉरिडोर बनाने का भी निर्णय लिया गया है।

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास के लिए वर्तमान में कुल 18,215 करोड़ रुपये लागत की 37 परियोजनाओं पर काम चल रहा है। राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास के लिए 11 विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार की जा रही हैं, इन सड़कों की लंबाई 1131 किलोमीटर होगी, जिनकी कुल लागत 24,693 करोड़ रुपये है। राष्ट्रीय राजमार्गों के उन्नयन के लिए भारत सरकार द्वारा कुल 5353 करोड़ रुपये की लागत वाली 18 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है, जिसके सम्पूर्ण होने से राज्य के विकास को एक नयी गति मिलेगी। राज्य में वर्ष 2014 से 2025 तक 840 किलोमीटर लंबाई के सिंगल-मध्यवर्ती लेन राष्ट्रीय राजमार्ग को 2 या अधिक लेन में उन्नत किया गया है। राज्य में राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास के लिए 2014 से 2025 तक 21,380 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं।

राष्ट्रीय राजमार्गों के अलावा, भारत सरकार ने 2014 से 2025 तक केंद्रीय सड़क और सीआरआईएफ और इकनोमिक इंपोर्टेंस एवं इंटर स्टेट कनेक्टिविटी के तहत राज्य की सड़कों के विकास के लिए कुल 3826 करोड़ रुपये की लागत के 70 कार्यों को मंजूरी दी है। रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, बस्तर और सरगुजा जैसे क्षेत्रों में राजमार्गों के नेटवर्क को और मजबूत किया जा रहा है। रायपुर एवं दुर्ग शहर के नागरिकों को सघन एवं भारी यातयात से राहत पहुंचाने हेतु 2 पैकेजों में 92 किलोमीटर लंबाई वाला 6 लेन का रायपुर-दुर्ग बाईपास का भी निर्माण कराया जा रहा है, जिसकी लागत 2289 करोड़ रुपए है।

दो आर्थिक गलियारे

विशाखापट्टनम के पोर्ट के माध्यम से छत्तीसगढ़ के उत्पादों को वैश्विक बाजार मिलेगा, साथ ही रोजगार के नए अवसर भी बनेंगे। रायपुर-विशाखापट्टनम इकोनॉमिक कॉरिडोर का निर्माण किया जा रहा है, इस 6 लेन सड़क की लंबाई के 124 किलोमीटर होगी। इस मार्ग के लिए 4146 करोड़ रुपए की स्वीकृति दी गई है तथा निर्माण कार्य प्रगति पर है। रायपुर और बिलासपुर को झारखण्ड की औद्योगिक नगरी रांची और धनबाद से जोड़ने के लिए 4 लेन सड़क का बिलासपुर-उरगा-पत्थलगांव का निर्माण कराया जा रहा है, जिसकी लंबाई 157 किलोमीटर और लागत 4007 करोड़ रुपये है।

एल डब्ल्यू ई और जनमन योजना

भारत सरकार ने छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद की समस्या को समाप्त करने के लिए 2014 से 2025 तक लेफ्ट विंग एक्सट्रिमिस्म (एलडब्लूई) योजना के अंतर्गत महत्वपूर्ण सड़कों के विकास के लिए 2625 करोड़ रुपये व्यय की है। इसी प्रकार विशेष पिछड़ी जनजातीय समूह के विकास के लिए पीएम-जनमन योजना में राज्य को 715 सड़कें, 2449 किमी और 1699 करोड़ की स्वीकृति दी गई है। इन सड़कों से 775 विशेष पिछड़ी जनजातीय बसाहटें लाभान्वित होगी। भारत सरकार द्वारा देश में राज्यों को 4831 किमी लम्बाई की स्वीकृति में से राज्य को 2449 किमी लम्बाई की स्वीकृति दी गई है, जो कि कुल स्वीकृति का 51 प्रतिशत है। राष्ट्रीय राजमार्गों के आस-पास औद्योगिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए कोरबा-बिलासपुर इंडस्ट्रीयल कॉरिडोर के निर्माण का निर्णय लिया गया है। उरगा-कटघोरा बाईपास बसना से सारंगढ़ (माणिकपुर) फीडर रूट, सारंगढ़ से रायगढ़ फीडर रूट और रायपुर-लखनादोन आर्थिक गलियारा परियोजनाओं की कुल लंबाई 236.1 किलोमीटर है, जिसके लिए भारत सरकार ने कुल 9208 करोड़ स्वीकृत किया है।

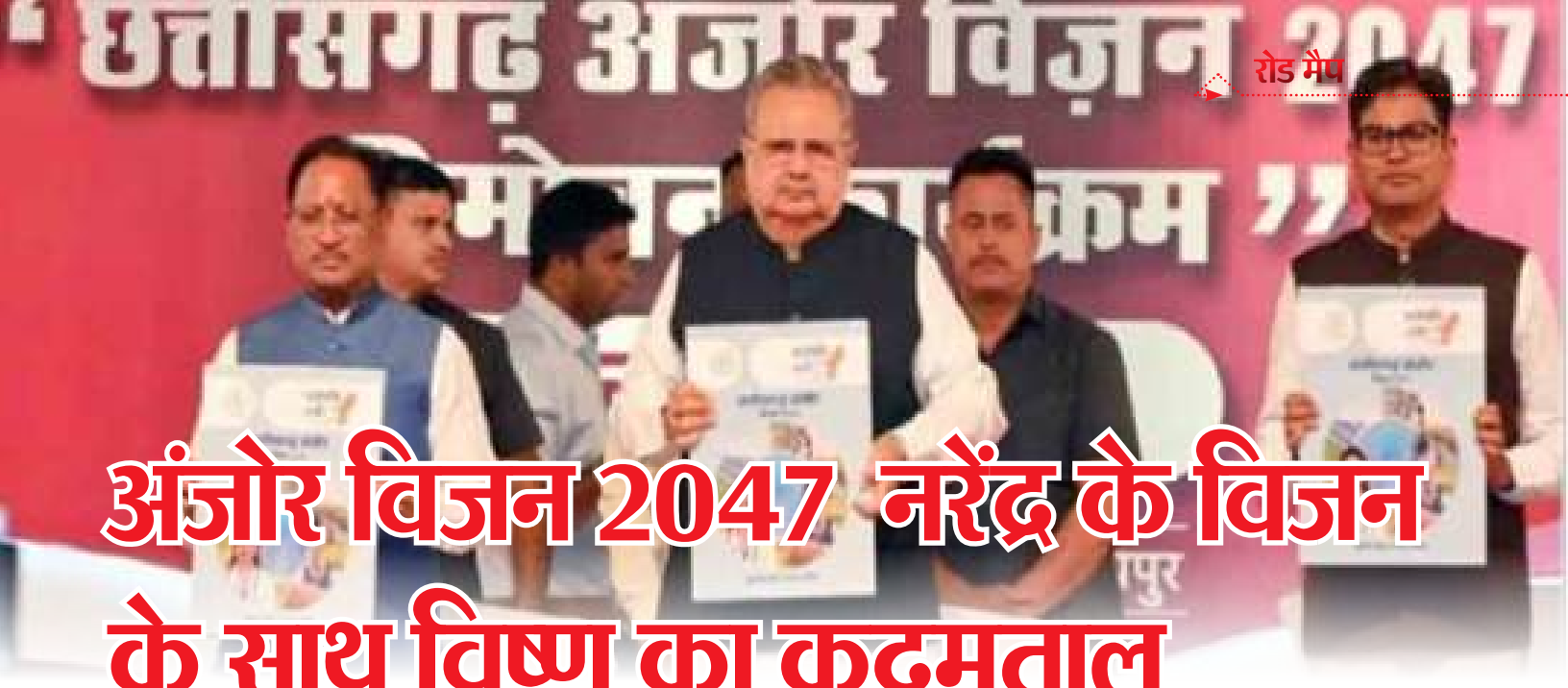

अंजोर विजन 2047 नरेंद्र के विजन के साथ विष्णु का कदमताल

छत्तीसगढ़ की विष्णुदेव साय सरकार ने छत्तीसगढ़ अंजोर विजन-2047 जारी कर दिया है। यह विजन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 संकल्प पूरा करने की दिशा में राज्य का प्रयास है। यही है कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव कहते हैं कि यह दस्तावेज केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर, समृद्ध और विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण का एक ठोस संकल्प और स्पष्ट दिशा है। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि छत्तीसगढ़ उन चुनिंदा राज्यों में है जिन्होंने यह विज़न तैयार किया है।

विकसित भारत का छत्तीसगढ़ पावर हाउस

मुख्यमंत्री ने इस बात पर विशेष बल दिया कि विकसित भारत की भव्य इमारत को ऊर्जावान बनाने में छत्तीसगढ़ पावर हाउस की भूमिका निभाएगा। हमारा स्टील, इस लक्ष्य को फौलादी बनाएगा। स्टील उत्पादन को वर्ष 2030 तक 28 मिलियन टन से बढ़ाकर 45 मिलियन टन किया जाएगा। यह गर्व का विषय है कि जम्मू-कश्मीर में चिनाब नदी पर बने देश के सबसे ऊंचे ब्रिज में छत्तीसगढ़ के स्टील का उपयोग हुआ है। कोयला उत्पादन को 207 मिलियन टन से बढ़ाकर 437 मिलियन टन, बिजली उत्पादन को 30 हजार मेगावाट से देश में शीर्ष स्थान तक पहुंचाया जाएगा। आयरन ओर उत्पादन को 46 से बढ़ाकर 100 मिलियन टन किया जाएगा।

ऐसे होगा संतुलित विकास

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस अंजोर विज़न 2047 के माध्यम से राज्य के 13 प्रमुख क्षेत्रों में 10 मिशनों के माध्यम से आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को संतुलित रूप से आगे बढ़ाया जाएगा, इनमें कृषि, मैन्युफैक्चरिंग, पर्यटन, संस्कृति, लॉजिस्टिक्स और आईटी से लेकर जैविक खेती और शिक्षा तक का समावेश है। रायपुर की भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए लॉजिस्टिक्स नीति तैयार की गई है जो ई-कॉमर्स को गति देगी।

जीडीपी का बड़ा लक्ष्य

विष्णुदेव ने बताया कि इस विजन के माध्यम से राज्य की जीडीपी को 5 लाख करोड़ रुपए से वर्ष 2030 तक 11 लाख करोड़ और वर्ष 2047 तक 75 लाख करोड़ रुपए तक करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य है। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के लिए कृषि उन्नति मिशन, जैविक खेती, निर्यात आधारित संभावनाएं और किसान सम्मान निधि जैसी योजनाएं प्रभावी होंगी। वर्ष 2047 तक किसानों की आय में 10 गुना से अधिक वृद्धि का लक्ष्य रखा गया है।

नवा रायपुर में मेडीसिटी

स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन प्रत्याशा के क्षेत्र में भी ठोस योजनाएँ बनाई गई हैं। आयुष्मान भारत योजना के तहत 87 प्रतिशत लोग पहले ही कवर हो चुके हैं, लक्ष्य 100 प्रतिशत का है। नवा रायपुर में मेडीसिटी, बस्तर-सरगुजा में सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल तथा राज्य में कई मेडिकल कॉलेज स्थापित किए जा रहे हैं। युक्तियुक्तकरण के बाद अब कोई भी विद्यालय शिक्षकविहीन नहीं है। 5 हजार नई शिक्षक भर्ती, 1 हजार पीएमश्री स्कूल, 36 आदर्श कॉलेज और ग्लोबल स्किल यूनिवर्सिटी की स्थापना पर काम हो रहा है।

एक क्लिक पर मंजूरी

राज्य में सिंगल विंडो सिस्टम 2.0 के माध्यम से उद्योगों को एक क्लिक पर मंजूरी दी जा रही है। पर्यटन को उद्योग का दर्जा देकर बस्तर और सरगुजा में होम-स्टे व ईको टूरिज्म को बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्तमान में 2 करोड़ पर्यटक राज्य में आते हैं, जिन्हें वर्ष 2047 तक 10 करोड़ तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है।

“इस विज़न डाक्यूमेंट का निर्माण राज्य नीति आयोग ने विभागों के सहयोग और व्यापक जनभागीदारी से किया है। युवाओं, महिलाओं, कृषकों और विभिन्न हितधारकों से संवाद के माध्यम से इस दस्तावेज़ में उनकी आकांक्षाओं को समाहित किया गया है। देश की राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ राज्य की सांस्कृतिक विरासत को भी यथोचित सम्मान देते हुए यह दस्तावेज़ तैयार किया गया है। यह विज़न दस्तावेज़ केवल दिशादर्शक ही नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ को विकसित राज्य में रूपांतरित करने की एक ठोस रणनीतिक रूपरेखा भी है, जिसमें हर नागरिक की भूमिका अहम होगी और जिसका मूल्यांकन निरंतर प्रगति सूचकों के माध्यम से किया जा सकेगा।

-ओपी चौधरी, वित्त मंत्री

परंपरा और संस्कृति से सराबोर हरेली

रविन्द्र गिन्नौरे
ravindraginnore58@gmail.com

सावन मास की अमावस्या... जब वसुंधरा हरित परिधान ओढ़ लेती है ! गाँव- गाँव के खेत खलिहान, नदी, तालाब जल से छलक छलक उठते हैं। धान के बिरवा हर ओर हरे-हरे नजर आने लगते हैं। हवाओं के साथ लहराते दिख पड़ते हैं। खेती- किसानी का काम संपन्न हो जाता है और तब मनता है छत्तीसगढ का पहला त्यौहार हरेली। छत्तीसगढ़ की परंपरा, संस्कृति और आस्था को संजोकर जन कल्याण की भावना को लिए मनाई जाती है हरेली।

हरेली के दिन सुबह सुबह हर दरवाजे नीम की एक डंगाल खोंची जाती है। वहीं गाँव के लुहार देहरी पर एक कील ठोंकते हैं। किसी अनिष्ट की संभावना से बचने यह परंपरा निभाई जाती है। गांव का हर वर्ग हरेली में अपनी अपनी भूमिका निभाता है। राऊत, बढ़ई, बैगा, गुनिया, अपनी भागीदारी निभाते हैं। सुबह से ही हर ओर उल्लास और उमंग से भरे लोग और मस्ती से ठिठोली करते गेड़ी चढ़ गाँव की गलियों में दौड़ लगाते बच्चों की टोली का शोर सुन पड़ता है। धान के लहलहाते खेतों को देख महसूस होता है कि हर ओर हरियाली फैली हुई है। आकाश में बादलों को गरजना, कहीं रिमझिम बरसते मेध तो कहीं दूर कौंधती बिजली मानो प्रकृति भी हरेली का स्वागत करने आतुर हो उठीं हो। पर्यावरण, संरक्षण, संवर्धन का संदेश देते, वहीं कर्म को बल देते, गाँव में आपसी सौहार्द, को अपने में समेटता हुआ मनाया जाती है हरेली। अपने श्रम सीकरों से फसलों के लिए किसान अपने कृषि औजारों, गोधन की साज संभाल करते हैं। अनजाने अनिष्टों से बचने के लिए अनुष्ठान करते हैं। इसी के साथ उल्लासित हो मनाते हैं हरेली त्यौहार।

पशु कल्याण: गोधन संस्कृति गांव को आर्थिक स्वालंबन देती है। गोधन संवर्धन के राऊत आज भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो सतत पशुओं के कल्याण में लगे रहते हैं। हरेली के पहले ही जंगल में जाकर भांवर पेड़ की छाल बटोरते हैं। दशमूल कंद को खोदकर लाते हैं। वनौषधि से काढ़ा तैयार किया जाता है। हरेली की सुबह सांहड़ा देव की पूजा अर्चना कर काढा का वितरण किया जाता है। ग्रामीण अपने गाय, बैल, भैसों को आटे की लोदी खिलाते हैं और काढा पिलाते हैं। यह औषधि पशुधन को बीमारियों से बचाती है। राऊत सभी को शुभकामना देते हुए कहते हैं,

घन दुगानी पावय भइया पावय हमर असी से नाती पूत ले घर भरय जीयों लात बरीसे

पौराणिक मान्यता – प्राकृतिक, देवीय और, मानवीय संकटों से गाँव की रक्षा के लिए बैगा की अपनी भूमिका निभाता है। गांव का बैगा ही सं ामक रोगों, शुत्रुओं और कष्टो से रक्षा करने में समर्थ होता है। गांव बंद किया जाता है और रात में सवनाई चलाई जाती है। घर की दीवारों पर गोबर से पुतरा पुतरी अंकित किए जाते हैं। पशुधन को खुरहा चपका बीमारी से बचाने के लिए अर्जुन के दस नामों का उल्लेख किया जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार महाभारत काल में

अर्जुन विराटनगर में वृहनल्ला बने थे। अर्जुन जब अपने असली रूप में वापस आये तब विराटनगर में फैली पशुओं की बीमारी अपने आप समाप्त हो गयी। इस घटना को ध्यान में रखकर अर्जुन का नाम स्मरण किया जाता है।

कृषि औजार की पूजा – हरेली का तीसरा महत्वपूर्ण चरण है कृषि उपयोगी औजारों को धोना। खेती का काम पूरा हो जाता है फिर नागर, कुदारी, रापा, बसुला, टंगिया, आरी, भंवारी, साबर, चटवार, हंसिया, बिंधना जैसे उपकरणों को निकालकर धोया जाता है। ग्राम- देवताओं और लोक देवताओं के साथ इनकी भी पूजा-अर्चना की जाती है। चीला रोटी का भोग लगाया जाता है। कृषि औजार किसानों के अंलकार हैं। इनकी सुरक्षा उतना ही जरूरी है जितनी कि आभूषण की। कहा गया है..

नागर तुतारी टंगिया कुदारी किसान के गहना
अऊ किसनिन के रापा गैंती झऊंहा नहना ।।

लोक देवी-देवता – लोक देवताओं के बारे में मान्यता है कि ये ग्रामीणों का दुख दूर करते हैं। हर गांव के अपने एक अलग देवी-देवता होते हैं जिनकी पूजा अर्चना की जाती है। गांवों में तो हरेली से लेकर ऋषि पंचमी तक तंत्र मंत्र सीखने की प्र िया भी चलती रहती है, जिसकी शुरुआत हरेली से होती है।

हरेली का उल्लास –बच्चों का उत्साह द्विगुणित करने के लिए इसी दिन बांस से बनी गेंड़ी चढ़ने की परंपरा निभाई जाती है। कीचड़ पानी से सराबोर हुई गांव की गलियों में गेड़ी पर चढ़े लोग दिखते हैं। हरेली त्यौहार में गेड़ी दौड़ प्रतियोगिता आयोजित होती है कहीं गेंड़ी नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है। महीने भर गेंड़ी का आनंद लेने के बाद इसे विसर्जित कर दिया जाता है। हरेली पर गांव के चौपाल में पारंपरिक रूप से धार्मिक अनुष्ठान होता है। कहीं आल्हा सुनाई देती है, तो कहीं रामायण की स्वर लहरियां गूंज उठती हैं। लोकमान्यता है कि जब तक हरियाली रहेगी, तब तक किसानों के खेत आबाद रहेंगे। जंगल हरे-भरे रहेंगे। जंगल हरे रहेंगे, तो उनके पशुओं के उत्तम स्वास्थ्य के लिए चदिव्य रसायनज की प्राप्ति होती रहेगी। हर हमेशा हरियाली बनी रहे, जो सब का पोषण करती रहे, ऐसी परंपराओं को संजोए हरेली त्यौहार मनाया जाता है।

जशपुर के 48 मंदिरों का जीर्णोद्धार

छत्तीसगढ़ सरकार राज्य की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण की दिशा में लगातार प्रयास किए जा रहे है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निर्देश पर जशपुर जिले के 48 प्राचीन और जनआस्था से जुड़े मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए 2 करोड़ 3 लाख 59 हजार रुपए की प्रशासकीय स्वीकृति राज्य शासन ने दी है। इससे जशपुर जिले की धार्मिक पहचान को सहेजने के साथ-साथ क्षेत्रीय पर्यटन और स्थानीय रोजगार को भी बढ़ावा मिलेगा।

धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग के आदेश के अनुसार मंदिरों के विकास, संरक्षण और सौंदर्यीकरण कार्यों को शीघ्र प्रारंभ करने के निर्देश दिए गए हैं। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की पहल पर यह कार्य धार्मिक पर्यटन को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

मुख्यमंत्री का संकल्प

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि जशपुर की पावन धरती सदैव से श्रद्धा, संस्कृति और आस्था का केंद्र रही है। इन मंदिरों का जीर्णद्धार केवल संरचना का नवीनीकरण नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक चेतना और आत्मिक ऊर्जा का पुनर्जागरण है। मेरा संकल्प है कि हर ग्राम का धार्मिक स्थल सुव्यवस्थित हो, जिससे वहां न केवल भक्ति का वातावरण बने बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी गति मिले।

इन मंदिरों का होगा जीर्णोद्धार

जशपुर जिले के जिन प्रमुख मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए राशि स्वीकृत की गई है, उनमें ग्राम चेटबा के हनुमान, गायत्री व श्रीराम मंदिर, प्रत्येक के लिए 5-5 लाख रुपए, ग्राम दोकड़ा के हनुमान, राधाकृष्ण एवं डुमरटोली मंदिर, कुल 13 लाख रुपए, ग्राम कटंगखार, नारियरडांड, कोहलनझरिया, सिंगीबहार, अमडीहा, समडमा, साजबहार, रायकेरा, बटुराबहर, सिंदरीमुंडा और हेठघिंचा के मंदिरों में 3 से 5 लाख रुपए तक मंजूरी दी गई है।

इसी तरह कुनकुरी थाना परिसर मंदिर और कई अन्य ग्रामों के शिव व हनुमान मंदिर, जिनमें ग्राम पण्डरापाठ स्थित नागेश्वर धाम मंदिर के लिए 4.79 लाख रुपए और रायकेरा श्री जगन्नाथ मंदिर के लिए 4.80 लाख रुपए की स्वीकृति प्रदान की गई है। इससे ग्राम स्तर पर बिखरे धार्मिक स्थलों का सुनियोजित विकास सुनिश्चित होगा, जिससे वहां का धार्मिक स्वरूप, सांस्कृतिक पहचान और पर्यटकीय महत्व भी बढ़ेगा।

घटाएं सावन की.....

ये रिमझिम फुहारें,
ये घटाएं सावन की.....
तेरा चुपके से
बादलों की ओट से.....
वो मुस्कुराना बड़ा
अच्छा लगता है....

जैसे निहारे पिया..
चकोर चांद को,
मैं निहारूं तुम्हें सांवरे....
वो घटाओं -सा घुमड़ कर
मुझे आलिंगन में लेना ....
बड़ा अच्छा लगता है
पपीहा पीहु पीहु करें
कोकिल कुहु कुहु...
मन भी बावरा
पुकारे तुम्हें ही ओर चहुं....
मृगतृष्णा सा मन
भटके वन वन ...
चाह में कस्तुरी के साजन
बन हवा के झोंके सा....
हौले से तुम्हारा
सहला जाना ..
बड़ा अच्छा लगता है...
पड़ गए झूले सावन की
सखियां भी करें ठिठोली...
सुनकर उनकी ताने ,
हुईं जाऊं मैं लाज से दोहरी....
बन मेघ मल्हार सा-तुम्हारा....
तन मन भीगो जाना
बड़ा अच्छा लगता है.....

-सुनीता अग्रवाल
भाटापारा, छत्तीसगढ़

संजीव-नीः रोटी के पीछे आदमी

हर रोटी के पीछे
एक आदमी होता है
और आदमी के
पीछे रोटियां केवल
उसके लिए नहीं
उसके पीछे-पीछे
परिवार के पूरे
हर उस चेहरे के पीछे
जो उससे जुड़े होते हैं
रोटी का अपना कोई
चेहरा नहीं होता
वह हर उस आदमी
से जुड़ जाती है जो
अपना पेट भरने उसे खाता है
अब यह समझना कठिन है
रोटी के लिए आदमी है
या रोटी आदमी के लिए
बच्चे बूढ़े स्त्री पुरुष
सबके लिए होती है रोटियां
बच्चों की मुस्कुराहट
के पीछे रोटियां
बूढ़े की ताकत के
पीछे रोटीयां
औरत के चूल्हे में पकती रोटियां
औरत के पीछे भी होती है रोटियां,
हर संघर्ष ,जीत उल्लास के
पीछे होती है ढेर सी रोटियां
हार की मयूषी विषाद में
छिपी होती है पकती रोटियां।
रोटी हर समय हर उस
आदमी का चेहरा होती है
जो उसके लिए पसीना बहाता है
कब जाकर रोटी को
अपने पीछे से थाली में लाकर
बच्चों पत्नी के साथ
चटनी के साथ खा पाता है
अब रोटियां
आदमी के पीछे नहीं
गोलाकार थाली में होती है।

संजीव ठाकुर
रायपुर छत्तीसगढ़
9009 415 415

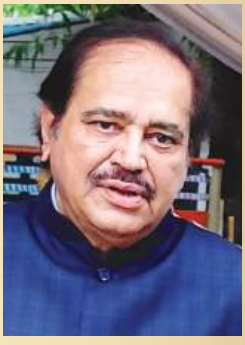

ध्वनि ने वैज्ञानिकों को चौंकाया

महत्वपूर्ण अनुसंधान से इस बात का पता चला है कि क्वांटम ध्वनि, जिसे अब तक व्यवधान माना जाता था, क्योंकि यह नाजुक क्वांटम प्रणालियों के साथ खिलवाड़ करता है। हमारी सोच के अनुसार हमेशा यह नुकसान पहुंचाने वाला नहीं हो सकता, यह कभी-कभी लाभ भी पहुंचा सकता है। इस खोज के केंद्र में क्वांटम का उलझाव है। यह एक अजीबोगरीब घटना है, जिसे आइंस्टीन ने एक बार 'दूरस्थ डरावनी क्रिया' कहा था। यह एक रहस्यमय कड़ी है, जो अंतरिक्ष में कणों को बांधती है और क्वांटम भौतिकी के केंद्र में स्थित है। परंपरागत रूप से, क्वांटम ध्वनि को उलझी हुई प्रणालियों का दुश्मन माना जाता है, जिसके कारण वे अपनी उलझाव खो देते हैं, इस घटना को 'डिकोहेरेंस' कहा जाता है।

रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट (आरआरआई) के अनुसंधानकर्ताओं और सहयोगियों द्वारा किए गए एक नए अध्ययन से पता चलता है कि क्वांटम उलझाव का एक कम ज्ञात रूप, अंतःकणीय उलझाव (जिसमें एक ही कण के भीतर लिंक शामिल होते हैं), न केवल ध्वनि के सामने अधिक मजबूत होता है, बल्कि ध्वनि से भी उभर सकता है। ध्वनि के प्रभाव में यह उलझाव किस प्रकार बदलता है, इसका पता लगाने के लिए एक सटीक गणितीय सूत्र का इस्तेमाल करते हुए, भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के स्वायत्त संस्थान, आरआरआई के अनुसंधानकर्ताओं ने भारतीय विज्ञान संस्थान, भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान - कोलकाता और कैलगरी विश्वविद्यालय के सहयोगियों के साथ मिलकर यह पता लगाया कि ध्वनि, विशेष रूप से एम्पलीट्यूड डेम्पिंग, न केवल उलझाव को मिटाता है, बल्कि कुछ निश्चित परिस्थितियों में इसे पुनर्जीवित भी करता है।

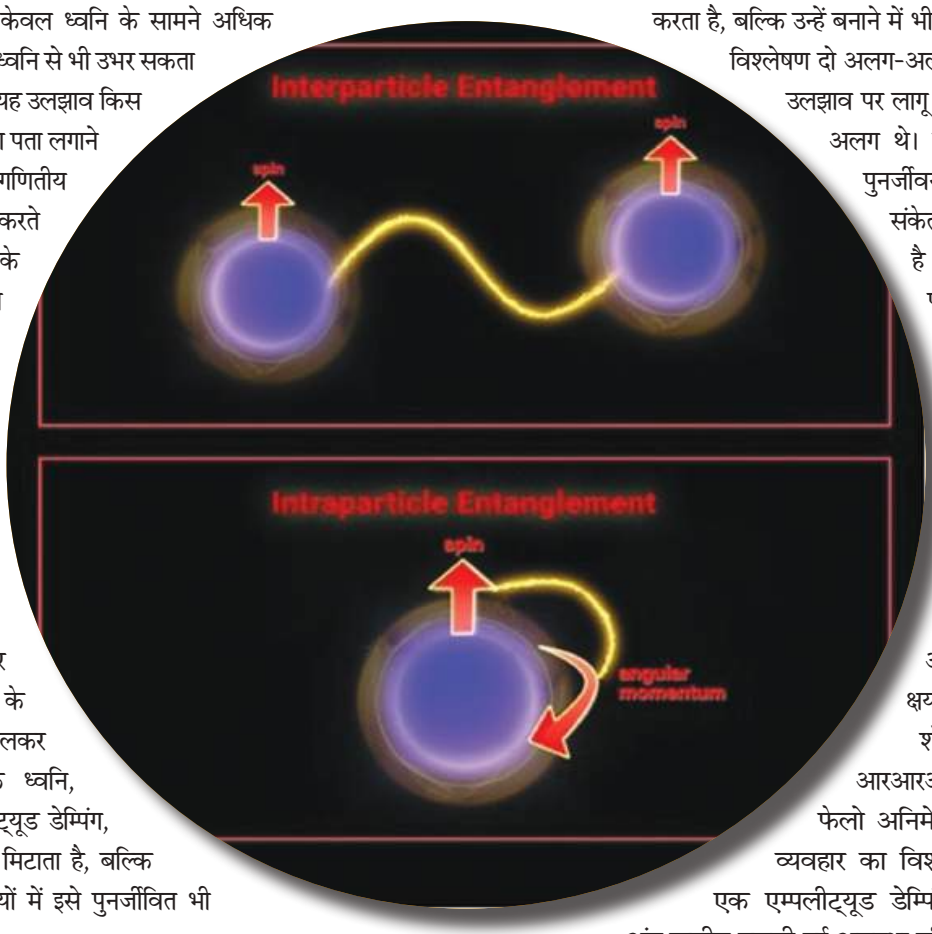

इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि यह अंतःकणीय प्रणालियों में प्रारंभिक रूप से असम्बद्ध अवस्था में भी उलझाव उत्पन्न कर सकता है। दूसरे शब्दों में, सही परिस्थितियों में, ध्वनि न केवल क्वांटम सहसंबंधों को नष्ट करता है, बल्कि उन्हें बनाने में भी मदद कर सकता है। जब यही विश्लेषण दो अलग-अलग कणों से जुड़े अंतर-कणीय उलझाव पर लागू किया गया, तो परिणाम काफी अलग थे। उलझाव केवल क्षयित हुआ, पुनर्जीवन या स्वतः निर्माण के कोई संकेत नहीं मिले। इससे पता चलता है कि अंतःकणीय उलझाव पर्यावरणीय ध्वनि के तहत अधिक मजबूत और लचीला होता है, जबकि पुनर्जीवन और निर्माण की घटनाएं विशेष रूप से एम्पलीट्यूड डेम्पिंग स्थितियों में देखी गई। अध्ययन किए गए सभी तीन ध्वनि चैनलों में अंतर-कणीय उलझाव की तुलना में अंतःकणीय उलझाव का धीमा क्षय एक समान था।

शोधपत्र के प्रमुख लेखक और आरआरआई में पोस्ट-डॉक्टरल फेलो अनिमेष सिन्हा रॉय ने कहा, इस व्यवहार का विश्लेषण करने के लिए, हम एक एम्पलीट्यूड डेम्पिंग चैनल के अधीन एक अंतःकणीय उलझी हुई अवस्था की सहमति (उलझन का एक

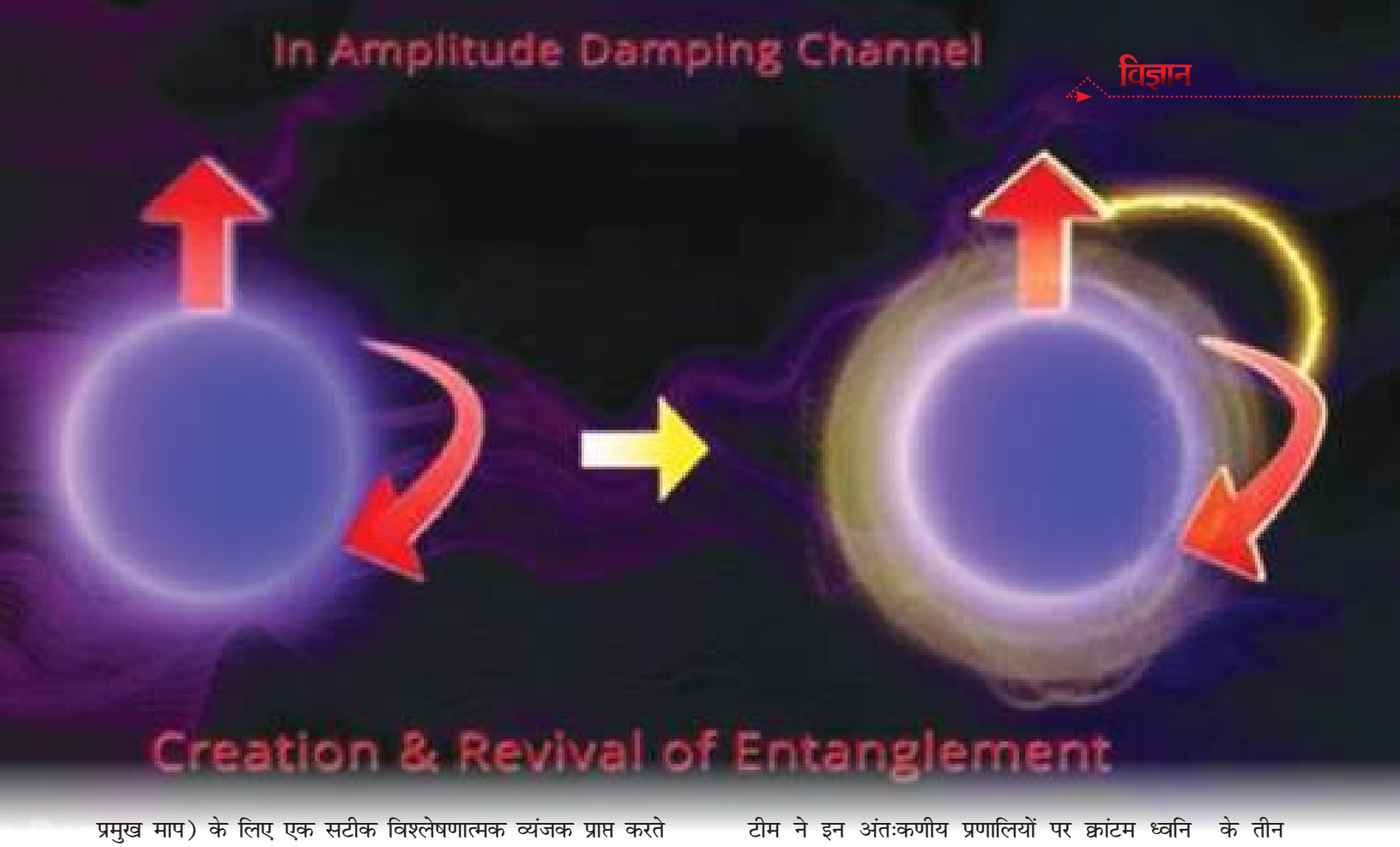

प्रमुख माप) के लिए एक सटीक विश्लेषणात्मक व्यंजक प्राप्त करते हैं, जो एक सुंदर ज्यामितीय निरूपण भी प्रदान करता है। इस सूत्र से यह अनुमान लगाना संभव हो जाता है कि इनपुट अवस्था और ध्वनि की तीव्रता के आधार पर उलझाव किस प्रकार व्यवहार करेगा। अंतराणु उलझाव की ध्वनि के तहत जीवित रहने और यहां तक कि पुनर्जीवित होने की क्षमता इंगित करती है कि यह अधिक कुशल और स्थिर क्वांटम प्रणालियों के निर्माण के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है, जिसके क्वांटम प्रौद्योगिकी के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ हो सकते हैं। आरआरआई में क्वांटम सूचना और कंप्यूटिंग प्रयोगशाला के प्रमुख प्रोफेसर उर्बसी सिन्हा ने कहा, हमारा अध्ययन अंतराणु उलझाव में विसंबद्धता के लिए सामान्य रूपरेखा तैयार करता है। अगले कदम के रूप में, इसे और अधिक यथार्थवादी बनाने के लिए इसे विशिष्ट भौतिक प्रणालियों की ओर विस्तारित किया जाना चाहिए। हम स्वयं क्वांटम संचार और कंप्यूटिंग जैसे कुछ क्वांटम प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल में एकल फोटॉन और अंतराणु उलझाव का उपयोग करके एक प्रयोग पर काम कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, चूंकि परिणाम किसी विशेष भौतिक सेटअप पर निर्भर नहीं हैं, इसलिए वे फोटॉन, न्यूट्रॉन और फंसे हुए आयनों जैसे कई प्लेटफार्मों पर स्थिर होंगे।

उल्लेखनीय रूप से, फ्रंटियर्स इन क्वांटम साइंस एंड टेक्नोलॉजी में प्रकाशित अध्ययन, ग्लोबल नॉइज मॉडल का उपयोग करता है, जो कण को एक पूरे के रूप में मानता है, जबकि पिछले अधिकांश मॉडल सिस्टम के प्रत्येक भाग को अलग-अलग मानते थे। यह एक अधिक भौतिक रूप से यथार्थवादी परिदृश्य प्रस्तुत करता है, क्योंकि एक कण के आंतरिक गुण आमतौर पर एक ही वातावरण के साथ परस्पर क्रिया करते हैं। व्यावहारिक और लचीले क्वांटम संसाधनों के विकास के लिए यह जानना आवश्यक है कि वास्तविक ध्वनि की स्थितियों में उलझाव किस प्रकार व्यवहार करता है।

टीम ने इन अंतःकणीय प्रणालियों पर क्वांटम ध्वनि के तीन सामान्य प्रकारों: एम्पलीट्यूड डेम्पिंग, फेज डेम्पिंग और विध्रुवीकरण (डिपोलराइजिंग) ध्वनि के प्रभाव का अध्ययन किया। इनमें से प्रत्येक एक अलग प्रकार के पर्यावरणीय विक्षोभ का अनुकरण करता है। उदाहरण के लिए एम्पलीट्यूड डेम्पिंग, प्रणाली में ऊर्जा हानि को दर्शाता है, ठीक उसी तरह जैसे एक उत्तेजित क्वांटम अवस्था मूल अवस्था में शिथिल हो जाती है। फेज डेम्पिंग, क्वांटम व्यतिकरण के लिए महत्वपूर्ण नाजुक फेज संबंधों को बाधित करता है, जबकि विध्रुवीकरण ध्वनि, क्वांटम अवस्था को सभी दिशाओं में अनियमित रूप से परिवर्तित करता है।

बोस इंस्टीट्यूट, कोलकाता के क्वांटम उलझाव के क्षेत्र के विशेषज्ञ प्रोफेसर दीपांकर होम ने इस काम को वास्तव में एक सफलता कहा कि यह उलझाव के एक नए रूप का उपयोग करके ध्वनि /डेम्पिंग के विभिन्न मॉडलों की उपस्थिति में उपयोगकर्ता के अनुकूल, व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य अत्याधुनिक क्वांटम तकनीकी इस्तेमाल के लिए अज्ञात रास्ते खोलने का वादा करता है, अर्थात एकल कण के विभिन्न गुणों के बीच उलझाव, जिसे इंट्रापार्टिकल उलझाव कहा जाता है।

रहस्य उजागर होने की प्रतीक्षा

इंडिया-ट्रेंटो प्रोग्राम ऑन एडवांस्ड रिसर्च के अंतर्गत संचालित और राष्ट्रीय क्वांटम मिशन द्वारा आंशिक रूप से समर्थित यह अध्ययन लंबे समय से चली आ रही धारणा को चुनौती देता है कि ध्वनि अनिवार्य रूप से उलझाव का दुश्मन है। यह बताता है कि कुछ शर्तों के अंतर्गत ध्वनि एक असामान्य दोस्त हो सकता है। यह अग्रणी अनुसंधान और नवाचार प्रौद्योगिकी के लिए नए रास्ते खोलता है, जिसका अर्थ है कि क्वांटम दुनिया अभी भी छुपे हुए आश्चर्यों से भरी हुई है तथा इसके कई रहस्य अभी भी उजागर होने की प्रतीक्षा में हैं।

सेल्फी का भूत

नारायण-नारायण की आवाज सुनकर प्रभु की तन्द्रा भंग हुई। वे शेषसैया से उठकर बैठते हुए स्वागत की मुद्रा में बोले- आइये देवर्षि, आइये। बहुत दिनों के बाद भ्रष्टाचारियों के बीच किसी ईमानदार आफिसर की तरह नजर आ रहे हो। हम तो समझ रहे थे कि आपका भाव भी अरहर दाल की तरह बढ़ गया है। तभी नजर नहीं आ रहे हैं। मगर आज हमारा भ्रम टूट गया है। बहुत अच्छा लगा आपके आने पर हमें। क्या बात है आपका चेहरा तो नेताओं के भाग्य की तरह चमक रहा है। सिर पर काले घुंघराले बालों की चोंटी देखकर तो ऐसा लग रहा है मानों काले धन का खजाना तो यहीं पर है। लगता है आजकल आप कांति सीरिज के सौदर्य प्रसाधन का इस्तेमाल कर रहे है?

वीरेन्द्र सरल, बोड़रा, मगरलोड,
जिला-धमतरी (छत्तीसगढ़)

देवर्षि जोरदार ठहाका लगाते हुए बोले-प्रभु! मैं तो डर रहा था कि कहीं आप मेरी चोटी को स्विस बैंक ही न कह बैठें। हम तो बैरागी हैं। हमें सौदर्य प्रसाधन इस्तेमाल करने की क्या आवश्यकता है। एक बार आपके मायाजाल में फँसकर आपसे सुन्दर सूरत जरूर मांग बैठे थे। और आपने हमारा मुँह बन्दर का बनाकर भरी सभा में जो दुर्गति कराई थी उसे याद करके ही कलेजा धक से रह जाता हैं। हमने तो उसी दिन से कान पकड़कर कसम खा ली है कि अब कभी भी चेहरा सुन्दर बनाने के लोभ में नहीं पड़ेंगे। ये सब तो संसारिक लोगों के चोचले हैं। अपने काले कारनामों से दिल पर कालिख पोतते जा रहे हैं और चेहरे पर गोरेपन की क्रीम लगा रहे है। लोगों को कौन समझाये, गोरेपन की क्रीम से यदि त्वचा का रंग गोरा हो जाता है तो फिर संसार मे किसी को काला ही नहीं होना चाहिए। लोग अपने भैसों पर या काले कुत्तों पर कोई गोरेपन की क्रीम लगाकर स्वयं देख लें तो सारी असलियत सामने आ जायेगी। पता नहीं श्वेत -अश्वेत का चक्कर किस सिरफिरे की दिमाग की उपज है। मानवता के नाम पर कलंक इस रंग भेद का समाप्त होना मनुष्यता के लिए बहुत ही आवश्यक है।

प्रभु! आप तो व्यंग्य बाण चलाने में दक्ष है। आज मैं भी आपके चपेट आ गया। मैं जानता था, बहुत दिनों के बाद आपके पास जाने पर इस तरह के व्यंग्य बाणों का सामना मुझे करना ही पड़ेगा। आपकी सौम्य मुस्कराहट और शालीन व्यंग्य विनोद से हृदय आल्हादित हो जाता है प्रभु। अब आप सुनाइये आप कैसे हैं?

प्रभु उसी सौम्य मुस्कराहट के साथ बोले-हमारा क्या है देवर्षि! हम तो बस देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान, कितना बदल गया इंसान का भजन सुनते हुए मूक दर्शक बने बैठें हैं। इंसान सफलता का सेहरा तो अपने सिर पर बाँधता है और विफलता का ठीकरा हमारे सिर पर फोड़कर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर लेता है। अब आप ही बताइये ऐसी स्थिति में मूकदर्शक बने रहने के सिवाय और क्या किया जा सकता है। हमने इंसान को बुद्धि दी, विवेक दिया, सुनहरा संसार दिया। अपने पास जो कुछ भी था सब दे दिया। इस उम्मीद के साथ कि यह मानव नाम का प्राणी हमारा ही प्रतिरूप सिद्ध होगा। लेकिन आज तो सब कुछ उल्टा-पुल्टा हो रहा है। लोग हमारे ही नाम पर आपस में लड़ मर रहे है। मानवता धर्म को छोड़कर सब अपने-अपने धर्मो की ध्वजा उठाये अपने आप को ही सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने पर तुले हुए है। बड़ी पीड़ा होती है यह सब देखकर पर क्या करे? अरे! मैं तो अपनी ही व्यथा कहने लगा अब आप अपनी कथा भी तो सुनाइये। आखिर बहुत दिनों के बाद आपके पावन चरणों की धूल से मेरा यह आँगन पवित्र हुआ है।

देवर्षि बोले-प्रभु आप तो जानते हैं। मेरे यह शापित कदम कभी एक जगह ठहरते नहीं हैं। जब तब नेताओं की जुबान की तरह इधर-उधर फिसलते ही रहते हैं। बाद में मुझे भी उनके जैसा ही यू-टर्न लेते हुए कहना पड़ता कि मेरा यहाँ आने का उद्देश्य यह नही था। अभी-अभी मैं मृत्यु लोक से भ्रमण करके लौटा हूँ। मैंने लोगों को बात करते सुना कि एक भूत आजकल वहाँ बड़ा आतंक मचा रखा है। लोग लगातार उस भूत बाधा के चपेट में आ रहे है। उस भूत के डर से मैं भी वहां से भागा हुआ सीधे आपके पास चला आ रहा था पर रास्ते में कुछ यमदूतों के साथ यमराज जी से भी मुलाकात हो गई। यमराज ने बताया कि उस भूत के कारण उसके विभाग पर वर्क लोड काफी बढ़ गया है। बेचारे

स्टाफ की कमी से पहले ही जूझ रहे है। ऊपर से यह भूत मुसीबत बनकर उनके पीछे पड़ गया है। यमराज और यमदूतों की हालत बड़ी दयनीय हो गई है प्रभु। मैंने पूछा तो यमराज ने रोते हुए अपनी पीड़ा मुझसे कही। वे कह रहे थे कि देवर्षि! आज बड़ी मुश्किल से समय निकाल कर स्थल निरीक्षण हेतु गया था। मुझे शक है कि आबादी नियंत्रण विभाग कहीं इस भूत को भारी धनराषि देकर अपने मिशन में तो नहीं लगा लिया है। अब आप ही से आसरा रह गया है यमराज को। यदि आप समय रहते यमराज का उस भूत से पीछा नहीं छुड़ा पाये तो उनका पूरा विभाग सामूहिक इस्तीफा देने का मन बना चुका है।

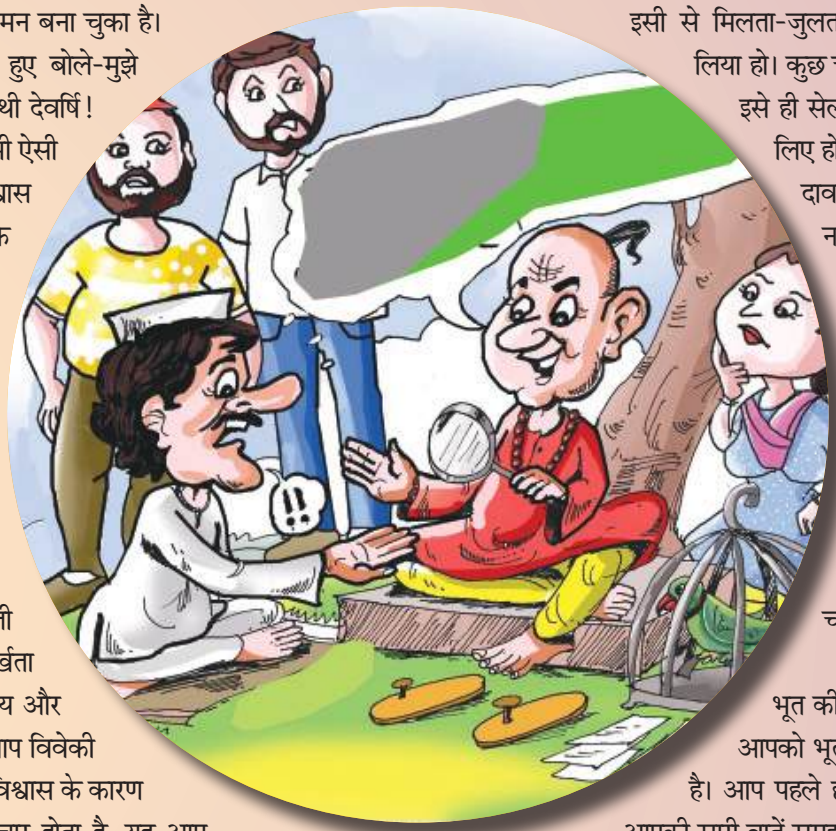

अब प्रभु गंभीर होते हुए बोले-मुझे आप से ऐसी उम्मीद नहीं थी देवर्षि! आप जैसे विवेकी वैरागी भी ऐसी दकियानूसी बातों पर विश्वास करने लगे। धिक्कार है आपके विवेक को। कहीं आपने कभी कुत्ता भूत, बिल्ली प्रेत या शेर पिचाश का नाम सुना है, नही ना? जब हम मानते हैं कि संसार के सभी जीवों में आत्मा का निवास है तब केवल मनुष्य की आत्मा ही देह छोड़कर भूत बनती होगी। ऐसा सोचना मूर्खता और अंधविश्वास के सिवाय और क्या कहा जा सकता है, आप विवेकी हैं स्वयं सोचिए। इस अंधविश्वास के कारण निर्दोषों पर कितना अत्याचार होता है, यह आप भलि-भांति जानते है। इन दकियानूसी बातों को जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी अपने दिमाग से निकाल दीजिए देवर्षि , इसी में सबका भला है।

देवर्षि सिर झुकाकर बोले-प्रभु! आज्ञा हो तो एक बात कहूँ? आपकी बात बिल्कुल सही है। मगर मैं एक अजीब उलझन में फँसा हुआ हूँ। लोग जिस भूत-प्रेत की बातें करते हैं उसे आपकी तरह में भी अंधविश्वास मानता हूँ और मैं जिस भूत की बात करता हूँ लोग उसे अंधविश्वास मानते है। प्रभु! आपको तो पता ही है, मैं प्रसिद्धी के भूत को ही सभी भूतों का सरगना मानता हूँ। प्रसिद्धी का यह भूत जब सिर पर सवार होता है तो मनुष्य के विवेक को खा जाता है। इसी भूत के वशीभूत हो लोग उल-जूलूल बयान देते है। ऊटपंटाग हरकत करते हैं। सार्वजनिक धन को काला बनाकर उस पर सफेद साँप की तरह कुण्डली मारे बैठ जाते है। स्वस्थ्य प्रतियोगिता या खिलाड़ी भावना को दरकिनार करके साम, दाम, दंड, भेद की नीति अपनाकर प्रतियोगिता में विजय प्राप्त कर लेते है। ज्यादा कुछ नही तो आजकल एक यंत्र आया है, क्या कहते हैं उसे, हाँ याद आया स्मार्टफोन। उस पर इंटरनेट नामक कोई चीज चलाते हैं और व्हाट्सप, फेसबुक पर क्षण-प्रतिक्षण अपना प्रोफाइल फोटो अपडेट करते रहते हैं। ये सब प्रसिद्धी के भूत का कमाल नही तो और क्या है? मृत्यु लोक मे लोग शायद किसी सेल्फी...। देवर्षि की बातें पूर्ण होने से पहले ही प्रभु कहने लगे सल्फी एक शीतल और मादक पेय होता है देवर्षि जी, जिसे वनवासी लोग सदियों से पीते आ रहे है। नशा कोई भूत नहीं होता यह तो जिस पर चढ़ता है उसे ही भूत बना देता है। हो सकता है आपने इसी से मिलता-जुलता एक और शब्द सेल फ्री सुन लिया हो। कुछ चीजें विक्रय हेतु नहीं बनायी जाती इसे ही सेल फ्री कहते हैं। ये मुफ्त बांटने के लिए होती है जैसे सलाह, आश्वासन, कोई दावा या वादा। इसमें पैसे का लेन-देन नहीं होता, समझ गये? देवर्षि अपनी झल्लाहट दबाकर अपने माथे को सहलाते हुए बोले-

प्रभु! पहले आप मेरी बात तो पूरी सुन लीजिए, उसके बाद ही चर्चा को आगे बढ़ाये तो बड़ी कृपा होगी। मैं आपको बता रहा था कि मृत्युलोक में लोग किसी सेल्फी नामक भयानक भूत की चर्चा कर रहे थे।

प्रभु बोले-आप फिर घूम-फिर कर भूत की बात पर आ गये। लगता है आज आपको भूत पर ही बात करने का भूत सवार है। आप पहले ही सेल्फी का भूत कह देते तो मैं आपकी सारी बातें समझ गया होता। मुझे समझाने के लिए आपको इतनी तकलीफ नहीं उठानी पड़ती। सेल्फी का यह भूत भी प्रसिद्धी के भूत का पॉकेट संस्करण है देवर्षि जी। अब आप इसे पॉकेट संस्करण कहो या आधुनिक अवतरण, एक ही बात है। ज्यादातर लोगों में मानवता के कल्याण के लिए अच्छे कार्य करने की कूबत तो रही नही। इसीलिए ऐसे लोग ओछे हथकंडे अपनाकर प्रसिद्धी पाने के चक्कर में इस भूत का शिकार होते है। मौत के मुहाने पर खड़े होकर सेल्फी लेने वाले महानुभाव लोग शायद सोचते होंगे कि इस सेल्फी के चक्कर में यदि वे वीरगति को प्राप्त हो गये तो शायद उन्हें स्वर्ग लोक में उन्हें वीरता पदक से सम्मानित किया जायेगा। कुछ लाइक और कमेंट्स के लिए मौत को आ गले लग जा कहते हुए आमंत्रित करना सिर पर कफ़न बांधे बहादुरों के सिवा कोई दूसरा कहाँ कर सकता है। आखिर इन्हें अपना चन्द्रमुख दिखाने के लिए ज्वालामुखी के सामने खड़े होने की क्या आवश्यकता है? चित्र को सुन्दर दिखाने के बजाय यदि ये चरित्र को सुन्दर बनाने के लिए कुछ प्रयास करते तो दुनिया ही स्वर्ग बन चुकी होती। पर इन मतिमूढ़ों को कौन समझाये?

भारतीय महिला फुटबॉल टीम में छत्तीसगढ़ की बेटी किरण

छत्तीसगढ़ की बेटी और भारतीय महिला फुटबॉल टीम की डिफेंडर किरण पिस्दा अब ऑस्ट्रेलिया में होने वाले एशिया कप फुटबॉल टूर्नामेंट में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी। खेल विभाग की डे-बोर्डिंग एकेडमी रायपुर में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही किरण ने हाल ही में थाईलैंड में हुए एशिया कप क्वालिफाइंग मैचों में मंगोलिया और साउथ कोरिया के खिलाफ शानदार प्रदर्शन किया।

चोट के बाद फिजियोथेरेपी से वापसी

क्वालिफाइंग से ठीक पहले किरण हैमस्ट्रिंग में खिंचाव के चलते गंभीर रूप से चोटिल हो गई थीं। इस कारण वह दौड़ने में भी असमर्थ थीं। प्रशिक्षक सरिता कुजूर के मार्गदर्शन में मेकाहारा अस्पताल में एमआरआई कराया गया और रिपोर्ट स्पोर्ट्स फिजियोथेरेपिस्ट प्रशांत चतुर्वेदी को भेजी गई। सात दिन की फिजियोथेरेपी के बाद ही किरण इंडिया कैंप में शामिल हो सकीं।

बालोद से रायपुर तक का सफर: किरण पिस्दा मूलतः बालोद जिले की रहने वाली हैं। वर्ष 2019 में वह पढ़ाई और फुटबॉल प्रशिक्षण के लिए रायपुर आईं और कोटा स्टेडियम स्थित डे-बोर्डिंग एकेडमी में दाखिला लिया। कोरोना काल में जब प्रैक्टिस बंद थी, उस दौरान उन्होंने स्ट्रेचिंग और वेट ट्रेनिंग पर विशेष ध्यान दिया। तकनीकी दक्षता उन्हें रायपुर में प्रशिक्षण के दौरान हासिल हुई।

देश की 40 में से चुनी गई 23 खिलाड़ियों में शामिल: क्वालिफाइंग मैचों के लिए देशभर से 40 खिलाड़ियों में से केवल 23 का चयन इंडिया कैंप के लिए हुआ था। किरण ने उनमें जगह बनाकर थाईलैंड में भारत का प्रतिनिधित्व किया और अब वह एशिया कप टीम का हिस्सा हैं। किरण ने कहा, क्वालिफिकेशन तो पहला पड़ाव था, अब असली चुनौती एशिया कप में श्रेष्ठता साबित करने की है।

सम्मान समारोह में मिली सराहना : 7 जुलाई को रायपुर लौटने पर खेल संचालनालय की प्रमुख तनुजा सलाम ने किरण का सम्मान किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा, किरण ने कड़ी मेहनत, आत्मविश्वास और लगन से यह मुकाम हासिल किया है। खेल विभाग हमेशा खिलाड़ियों के साथ है। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ फुटबॉल एसोसिएशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और जिला संघ के अध्यक्ष मुश्ताक अली ने कहा, 23 साल बाद भारतीय महिला टीम ने एशिया कप में क्वालिफाई किया है और उसमें छत्तीसगढ़ की खिलाड़ी का होना राज्य के लिए गर्व का विषय है।

सस्ता गोल्ड खरीदना होगा आसान

BIS ने हॉलमार्क नियमों में किया बदलाव

गोल्ड की शुद्धता की पुष्टि करने वाले हॉलमार्क नियमों में बदलाव किया गया है। भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) ने अब 9 कैरेट सोने से बने गहनों पर हॉलमार्क अनिवार्य कर दिया है। अब तक 24K, 23K,22K, 20K, 18K और 14K तक के गोल्ड से बनी वेलरी पर ही हॉलमार्क जरुरी था।

ऑल इंडिया जेम एंड वैलरी डोमेस्टिक काउंसिल ने बताया कि अब सभी वैलर्स और हॉलमार्किंग सेंटरों को BIS के नए नियमों का पालन करना होगा। नए नियम के अनुसार 9 कैरेट गोल्ड (375 ppt) भी अब अनिवार्य हॉलमार्किंग के दायरे में आ गया है। पहले 9 कैरेट सोने के लिए यह जरूरी नहीं था, लेकिन अब ग्राहकों को सोने की शुद्धता की सही जानकारी देने के लिए इसे भी हॉलमार्क करना जरूरी होगा।

हॉलमार्किंग कानूनी है

हॉलमार्किंग BIS अधिनियम, 2016 के तहत की जाती है। यह गहनों और कलाकृतियों में कीमती धातु की मात्रा को प्रमाणित करता है। इससे ग्राहकों को पता चलता है कि उनके गहनों में सोना कितना शुद्ध है। हॉलमार्किंग से ग्राहकों को ठगी से बचाया जा सकता है। हॉलमार्किंग के 8 ग्रेड होते हैं। हर ग्रेड सोने की शुद्धता को दर्शाता है। अब 9K सोना भी इस लिस्ट में शामिल हो गया है। इससे ग्राहकों को और भी विकल्प मिलेंगे।

अब घड़ियों और पेन पर हॉलमार्किंग जरूरी नहीं

BIS ने अपने नियमों में कुछ बदलाव भी किए हैं। अब सोने की घड़ियां और पेन को कलाकृतियों (Artefacts) की परिभाषा से बाहर कर दिया गया है। इसका मतलब है कि अब इन पर हॉलमार्किंग अनिवार्य नहीं है।

सोने के सिक्के के बारे में भी एक नया नियम बनाया गया है। अब 24 KF या 24 KS सोने की पतली शीट से बने सिक्के को ही 100% शुद्ध माना जाएगा। यह सिक्का केवल टकसाल या रिफाइनरी द्वारा ही बनाया जाना चाहिए और इसकी कोई कानूनी मुद्रा वैल्यू नहीं होनी चाहिए।

तन्वी द ग्रेट का रेड कार्पेट प्रीमियर

भारतीय राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (एनएफडीसी) ने अनुपम खेर प्रोडक्शंस के सहयोग से अपनी नवीनतम फीचर फिल्म, तन्वी द ग्रेट का भव्य रेड कार्पेट प्रीमियर 13 जुलाई को पीवीआर प्लाजा, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में आयोजित किया, जिसकी स्क्रीनिंग शाम 7:30 बजे शुरू हुई। एक मार्मिक और सशक्त कहानी, तन्वी द ग्रेट एक युवा ऑटिस्टिक महिला की कहानी है, जो दुनिया के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्र में खड़ी होने का साहस करती है, जहां उसके दिवंगत पिता कभी खड़े नहीं हो सके।

इस फिल्म में शुभांगी, अनुपम खेर, इयान ग्लेन, पल्लवी जोशी, जैकी श्रॉफ, बोमन ईरानी, नासिर, करण टैकर और अरविंद स्वामी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। प्रीमियर में दिल्ली की मुख्यमंत्री डॉ. रेखा गुप्ता भी मौजूद थीं। दिल्ली सरकार के मुख्य सचिव श्री धर्मेंद्र, विदेश सचिव श्री विक्रम मिस्री और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के सचिव श्री संजय जाजू के साथ-साथ सरकार और फिल्म जगत के अन्य गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद थे, जिन्होंने लचीलेपन, समावेशिता और अदम्य मानवीय भावना का जश्न मनाने वाली कहानियों के महत्व पर जोर दिया। यह फिल्म 18 जुलाई 2025 को पूरे भारत के सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है, जो दर्शकों को तन्वी की सभी बाधाओं के खिलाफ विजय की उल्लेखनीय यात्रा का गवाह बनने के लिए आमंत्रित करती है।

एनएफडीसी के बारे में: राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड (एनएफडीसी) की स्थापना भारत सरकार द्वारा 1975 में की गई थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य समय-समय पर केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित राष्ट्रीय आर्थिक नीति और उद्देश्यों के अनुसार भारतीय फिल्म उद्योग के एकीकृत और कुशल विकास की योजना बनाना, उसे बढ़ावा देना और व्यवस्थित करना था। यह प्रीमियर एनएफडीसी के आकर्षक कहानियों को आगे बढ़ाने और सार्थक सिनेमा को बढ़ावा देने के स्थायी दृष्टिकोण की पुष्टि करता है। पिछले पांच दशकों से, एनएफडीसी महत्वपूर्ण प्रस्तुतियों और दूरदर्शी सहयोगों के साथ भारत के सिनेमाई परिदृश्य को आकार देने में अग्रणी रहा है। जहां एनएफडीसी गर्व से अपनी 50वीं वर्षगांठ मना रहा है, वहीं तन्वी द ग्रेट बड़े पर्दे पर अद्भुत, परिवर्तनकारी कहानियां लाने के अपने निरंतर समर्पण का भी प्रमाण है।

www.anjaneyauniversity.ac.in

ANJANEYA UNIVERSITY

UGC APPROVED

RAIPUR

KNOWLEDGE VILLAGE NARDAHA, NEAR VIDHAN SABHA ROAD, RAIPUR

ACCREDITATION & RECOGNITION

PROGRAMS OFFERED @ AU

INTERIOR & FASHION
HOTEL MANAGEMENT
ARTS & HUMANITIES
COMPUTER SCIENCE
MANAGEMENT
FORENSIC SCIENCE
ENGINEERING
RESEARCH (PH.D.)
FILM MAKING
SCIENCE
COMMERCE
PHARMACY
JOURNALISM & MASS COMMUNICATION
LAW

KEY HIGHLIGHTS

GET 100%

JOB ASSISTANCE BY UNREAL EDGE MUMBAI

- UNREAL ENGINE MASTERY - LEARN FROM CERTIFIED INDUSTRY PROFESSIONALS USING REAL-WORLD PRODUCTION PIPELINES.
- PROJECT-BASED LEARNING: BUILD A PORTFOLIO WITH GAME LEVELS, CINEMATICS, AND VIRTUAL EXPERIENCES.
- ACCESS TO GLOBAL CAREER OPPORTUNITIES: PREPARE FOR ROLES IN METAVERSE, SIMULATION, GAMING, AND VIRTUAL PRODUCTION.
- STARTUP & ENTREPRENEURSHIP SUPPORT: FOR STUDENTS WITH BUSINESS OR GAME STUDIO ASPIRATIONS.

PARTNERSHIPS FOR STUDENT SUCCESS

CALL: 88967 96788, 88897 22225

MAIN CAMPUS : KNOWLEDGE VILLAGE NARDAHA, NEAR VIDHAN SABHA, RAIPUR (C.G.)
CITY CAMPUS : NEAR RAJ BHAVAN, DAGA BUILDING, CIVIL LINE, RAIPUR (C.G.)

ADMISSION OPEN 2025-26

भारत
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएं...
सुभाष
श्रीवास्तव
भिलाई